हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 31 मई 2026

11 खरीफ एमएसपी आदेश की प्रतियां जलाकर किसानों ने जताया रोष

12 नौतपा में बदला मौसम, आंधी के बाद झमाझम बारिश...

खबर संक्षेप

घर के बाहर हेरोइन बेचता आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। थाना शहर टोहाना पुलिस ने किला मोहल्ला में गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर अपने ही घर के बाहर हेरोइन बेच रहे एक व्यक्ति को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से पुलिस ने 8.56 ग्राम हेरोइन बरामद की है।

हथियारों का प्रदर्शन करने के मामले में आरोपी काबू

फतेहाबाद। सोशल मीडिया प्लेटफॉम्र्स पर हथियारों का प्रदर्शन करने और रील्स बनाकर माहौल खराब करने वालों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना भूना पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान गांव बैजलपुर निवासी विक्रम के रूप में हुई है। थाना भूना प्रभारी उप-निरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि बीते दिनों पुलिस टीम अपराध पड़ताल के संबंध में गांव बैजलपुर में मौजूद थी। इसी दौरान कार्रवाई की गई।

रोडवेज की बस स्टैंड पर नहीं आने से यात्री परेशान

ओढां। हरियाणा रोडवेज की डबवाली से हरिद्वार जाने वाली बस ओढ़ा बस स्टैंड पर आने की बजाए दूसरी तरफ रुकने से यात्रियों को बड़ी परेशानी हुई और एक दो सवारिया तो चढऩे से रह ही गई। दूसरी तरफ जाने के लिए रेलिंग पार करनी पड़ती जो मुश्किल है और दुर्घटना होने का भय भी होता है। यात्रियों ने बताया कि उन्हें सिरसा से किसान एक्स्प्रेस में दिल्ली जाना था इस बस के निकल जाने पर अब उन्हें दुसरी बस के आने का इंतजार करना पड़ेगा तब तक ट्रेन छुट भी सकती हैं।

मानसून की सूचना मात्र से दहशत में हैं घग्घर के तटवर्ती गांवों के लोग

छह दशक में 11 बार बाढ़ की मार फिर भी स्थायी समाधान का इंतजार

सुरेन्द्र असीजा ⏭ फतेहाबाद

भारत-पाक विभाजन से भी पुरानी समस्या का आज 6 दशक बाद भी हल नहीं निकल पाया है। सरकारें आई, सरकारें गई लेकिन फतेहाबाद में फिरोजशाह तुगलक किले के नीचे प्राकृतिक तौर पर बनी चिल्ली झील की समस्या का आज तक कोई समाधान नहीं खोज पाया। दरअसल प्राचीन रूप से यहां सरस्वती नदी का बहाव था। बाद में यह घग्गर का रूप धारण कर गई यानि एक बरसाती नदी बन गई। जब-जब भी हिमाचल की शिवालिक की पहाड़ियों में भारी बरसात हुई, तब तब फतेहाबाद के लोग उससे बच नहीं पाए। बरसात शिवालिक की पहाड़ियों में और नुकसान व त्रासदी का शिकार होता है फतेहाबाद। इन 6 दशकों में सरकारों ने फतेहाबाद को बाढ़ से बचाने के लिए घग्घर के लिए न जाने कितने मास्टर प्लान तैयार किए, लेकिन शासन-प्रशासन के आगे करोड़ों रुपये की विभिन्न विभाग बंदरबाट कर गए। स्थिति आज भी 6 दशक पुरानी है। यहां जब भी बाढ़ आई लाखों एकड़ भूमि, सैंकड़ों गांव, हजारों पशु व हजारों ढाणियों को अपने अंदर समा लिया। ताजा उदाहरण वर्ष 2023 का है, जब यहां एक लाख एकड़ से ज्यादा भूमि डूब गई। 1500 ढाणियों के बाशिंदे घर छोड़कर शहरों में जा बसे। करीब 200 ट्यूबवेल बैठ गए। हजारों मवेशियों को यहां से पलायन करना पड़ा। फतेहाबादवासियों की रूह आज भी मानसून का नाम सुनते ही कांप जाती है। इस बारे अनेक बुद्धिजीवियों ने सरकार से कड़े सवाल पूछते हुए जवाब मांगा है। घग्गर के तटबंध कमजोर होने व समय पर इनकी मुरम्मत न होने से बाढ़ यहां करीब 11 बार अपनी विनाशलीला दिखा चुकी है।

फतेहाबाद। वर्ष 2023 में शक्करपुरा रंगोई टूटने से चिम्मो पुल से फतेहाबाद की ओर बढ़ता पानी। (फाइल फोटो

जनप्रतिनिधि भी नहीं ले रहे सुध

सरकारों की कमजोर दूरदृष्टि व प्रशासन की मिसमैनेजमेंट के कारण ही यहां अनेकों बार बाढ़ आई। खेत तो खेत, जाखल के गांव और ढाणियां तक इसमें डूब जाती है। यहां के जनप्रतिनिधि भी यहां की सुध नहीं ले रहे। सरकार इस क्षेत्र के लिए कोई विशेष प्लान बनाएं। -स. हरमीत सिंह, फतेहाबाद

उद्योग लगाएं जिससे पानी प्रयोग हो सके

फतेहाबाद से कोई नदी नहीं गुजरती। सरकार को ऐसा कोई उद्योग लगाना चाहिए जिससे घग्गर का पानी भी प्रयोग में लाया जा सके और इसे साफ करके पीने योग्य बनाया जा सके। संकट के समय स्टॉक किए गए पानी का खेती में भी प्रयोग किया जा सकता है। -सुरेन्द्र नारंग, फतेहाबाद

ये गांव होते हैं प्रभावित

संभावित बाढ़ से प्रभावित 120 गांवों को प्रशासन ने चिन्हित किया है। इनमें फतेहाबाद के रजाबाद, धिड़, माजरा, बरसीन, बिसला, खानपुर, भड़ोलांवाली, बैजलपुर, बहबभम्बिया, अयाल्की, ढाणी ठोबा, ढाणी ईसर, हिजरावां खुर्द, नकटा, रत्ताटिब्बा, अहलीसदर, बहबलपुर के अलावा जाखल के 25, रतिया के 35 व फतेहाबाद के 42 गांव शामिल हैं।

जिले में कब-कब आई बाढ़

फतेहाबाद में वर्ष 1962, 1976, 1977, 1983, 1988, 1993, 1995, 1998, 2010 व 2023 में अपनी विनाशलीला दिखा चुकी है। इन गांवों के बुजुर्ग अभी तक उन दिनों को नहीं भूलते जब उनके खेत व गांव बाढ़ से बर्बाद हो गए। गांव चूहड़पुर के किसान करनैल सिंह ने बताया कि 2010 में बाढ़ ने उनके आस-पास के 20 गांवों को चपेट में ले लिया था। गांव की ढाणियों में रहने वाले लोगों के पास पीने को पानी तक नहीं था।

चांदपुरा साइफन के ओवरफ्लो होने से आई बाढ़

वर्ष 2023 में फतेहाबाद से गुजर रही घग्गर नदी के चांदपुरा साइफन में रिकार्ड तोड़ पानी का बहाव रहा। यहां 21 हजार क्यूसिक से अधिक पानी का बहाव दर्ज किया गया जबकि इसकी क्षमता 20 हजार क्यूसिक तक है। 15 जुलाई की रात को चांदपुरा बांध ऐसा टूटा कि पंजाब क्या, जाखल, टोहाना, रतिया के बाद बाढ़ का पानी फतेहाबाद शहर के बाईपास तक पहुंच गया।

किसी भी सरकार ने आज तक ध्यान नहीं दिया

मानसून के समय फतेहाबाद जिला के लोग बाढ़ के नाम पर भयभीत हो जाते हैं। दरअसल किसी भी सरकार ने आज तक यहां ध्यान नहीं दिया। हर वर्ष बैठकों व दौरों के बाद जिला के आला अधिकारी बयान देकर चुप हो जाते हैं। प्रशासन को चाहिए कि वह घग्गर के तटबंध मजबूत करें। गांवों में रिंग बांधों को स्थाई तौर पर पक्का किया जाए ताकि फतेहाबाद के लोगों को बाढ़ की विभीषका से बचाया जा सके। -दुष्यंत शर्मा, फतेहाबाद

खेतों में खड़ी फसले हो जाती हैं खराब

फतेहाबाद से गुजरती घग्गर नदी पर जाखल व रतिया क्षेत्र के सबसे गांव आते हैं। यहां पर जब भी घग्गर ओवरफ्लो हुई, खेतों में धान की फसल बर्बाद हो जाती है। यहां पर करीब 3 से 4 महीने तक पानी भरा रहता है जिससे किसान को अगली फसल का भी नुकसान होता है। सरकार को चाहिए कि इन जमीन के लिए विशेष योजना तैयार करें और बाढ़ प्रभावित किसानों के लिए राहत पैकेज की घोषणा करे। -संजीव गेरा

सिरसा। घटनास्थल पर एकत्रित ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

जलघर की डिग्गी में डूबने से युवक की मौत

- पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जिला नागरिक अस्पताल में पहुंचाया

हरिभूमि न्यूज ⏭ चोपटा

क्षेत्र के गांव जमाल में जलघर की डिग्गी में डूबने से एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान गांव जमाल निवासी राजवीर के रूप में हुई है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जिला नागरिक अस्पताल में पहुंचाया। ग्रामीणों ने शनिवार को जलघर की डिग्गी में एक युवक की लाश देखी और सूचना पुलिस को दी। ग्रामीणों ने पुलिस की मौजूदगी में युवक की लाश को डिग्गी से बाहर निकाला। बताया जा रहा है कि राजवीर अविवाहित है और उसका एक भाई भी है। दोनों भाई मजदूरी का काम करते थे। उनके माता पिता की कई साल पहले मौत हो चुकी है। युवक के जलघर की डिग्गी में डूबने के कारण का अभी कोई पता नहीं चल पाया है।

डबवाली में आत्महत्या

उधर, डबवाली में एक युवक ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है। मृतक की पहचान बॉबी के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि बॉबी पारिवारिक तनाव के चलते मानसिक रूप से परेशान था। बॉबी ने घर में ही फंदा लगाकर सुसाइड किया। डबवाली के एसएचओ देवीलाल ने बताया कि परिजनों के बयान दर्ज किए गए हैं और शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

प्लाईवुड के गोदाम में आग, लाखों का नुकसान

सिरसा। शहर के शमशाबाद पट्टी क्षेत्र में एक प्लाईवुड के गोदाम में शनिवार दोपहर को भयंकर आग लग गई। आगजनी में लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया है। मौके पर दमकल गाडिय़ां पहुंची और आग पर काबू पाने का प्रयास किया। जानकारी के अनुसार शमशाबाद पट्टी के ठाकुरों वाली ढाणी के निकट एक प्लाईवुड का गोदाम है। दोपहर को अचानक गोदाम में आग लग गई। आसपास के लोगों ने आग की लपटें देखी तो दमकल विभाग को सूचना दी, जिस पर दमकल की गई गाडियां मौके पर पहुंची और आग पर कड़ी मशक्कत के बाद काबू पाया गया। बताया जा रहा है कि आगजनी की इस घटना में गोदाम मालिक को लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। आग लगने के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है। वहीं आसपास रहने वाले लोगों ने विरोध जताते हुए कहा कि रिहायशी क्षेत्र में कई गोदाम व फैक्ट्रियां संचालित की जा रही है। उन्होंने जिला प्रशासन से मांग की है कि बिना अनुमति के चल रही फैक्ट्रियों को बंद करवाया जाए।

निवेश : सहज पके सो मीठा होय, जल्दबाजी में घाटा

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान बन चुका है। छोटी-छोटी रकम से निवेश शुरू करने की सुविधा और लंबी अवधि में बड़ा फंड बनाने की क्षमता ने इसे आम लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय बना दिया है। खासकर नौकरीपेशा और मध्यम वर्ग के लोग एसआईपी को भविष्य की आर्थिक सुरक्षा का मजबूत साधन मान रहे हैं। हालांकि, कई निवेशक बाजार में गिरावट आते ही घबरा जाते हैं और जल्दी पैसा निकाल लेते हैं। यही जल्दबाजी उन्हें नुकसान पहुंचाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि एसआईपी में असली मुनाफा धैर्य रखने वालों को मिलता है। हाल ही में सामने आई एक स्टडी भी यही साबित करती है कि जितनी लंबी अवधि तक निवेश जारी रखा जाए, जोखिम उतना कम होता जाता है और रिटर्न ज्यादा भरोसेमंद बनते हैं।

30 वर्ष की स्टडी में सामने आई बड़ी बात

एक स्टडी में अगस्त 1996 से अप्रैल 2024 तक के सेंसेक्स टीआरआई के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। इसमें मंथली एसआईपी निवेश के प्रदर्शन को अलग-अलग अवधियों में जांचा गया। स्टडी के मुताबिक कम समय के निवेश में रिटर्न काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा, जबकि लंबी अवधि में यह अंतर कम हो गया। यानी जो निवेशक थोड़े समय के लिए एसआईपी करते हैं, उन्हें कभी बड़ा मुनाफा तो कभी बड़ा नुकसान देखने को मिल सकता है। लेकिन जो लोग लंबे समय तक निवेश में बने रहते हैं, उन्हें अपेक्षाकृत स्थिर और बेहतर रिटर्न मिलता है।

तीन साल की एसआईपी में बड़ा जोखिम

स्टडी के अनुसार, तीन साल की एसआईपी में रिटर्न का अंतर बहुत ज्यादा देखने को मिला। कुछ निवेशकों को जहां 55.6 प्रतिशत तक का शानदार मुनाफा मिला, वहीं कई मामलों में 24.6 प्रतिशत तक का नुकसान भी हुआ। यह आंकड़े बताते हैं कि कम समय में शेयर बाजार की अस्थिरता निवेश पर गहरा असर डालती है। यदि बाजार गिरावट के दौर में हो और निवेशक जल्दबाजी में पैसा निकाल ले, तो नुकसान होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए विशेषज्ञ एसआईपी को शॉर्ट टर्म नहीं बल्कि लॉन्ग टर्म निवेश मानते हैं।

8 साल बाद घाटे की संभावना खत्म

स्टडी की सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि जिन निवेशकों ने लगातार 8 साल या उससे ज्यादा समय तक एसआईपी जारी रखी, उन्हें किसी भी अवधि में नुकसान नहीं हुआ। यानी लंबे समय तक निवेश बनाए रखने पर बाजार के उतार-चढ़ाव का असर धीरे-धीरे कम हो जाता है। विशेषज्ञों का कहना है कि लंबी अवधि में बाजार की गिरावट अस्थायी साबित होती है और अर्थव्यवस्था की ग्रोथ के साथ निवेश का मूल्य बढ़ता है। यही कारण है एसआईपी में समय सबसे बड़ा हथियार माना जाता है।

10 साल बाद बढ़ जाती है भरोसेमंद कमाई

स्टडी के मुताबिक, तीन साल की एसआईपी में 10 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न मिलने की संभावना 67 प्रतिशत रही। लेकिन जैसे-जैसे निवेश की अवधि बढ़ी, यह संभावना भी मजबूत होती गई। 10 साल के निवेश में 10 प्रतिशत से अधिक रिटर्न मिलने की संभावना 95 प्रतिशत तक पहुंच गई। वहीं 12 से 15 साल की एसआईपी में यह आंकड़ा 98 प्रतिशत रहा। इसका मतलब है कि लंबे समय तक निवेश करने वालों के लिए बेहतर रिटर्न की संभावना बेहद मजबूत हो जाती है।

15 वर्ष की एसआईपी ने दिया स्थिर रिटर्न

यदि 15 साल की एसआईपी का प्रदर्शन देखें तो रिटर्न का दायरा 7.3 प्रतिशत से 18.2 प्रतिशत के बीच रहा। यह अंतर तीन साल की तुलना में काफी कम है। लंबी अवधि में निवेश ज्यादा स्थिर और भरोसेमंद बन जाता है। विशेषज्ञ यह भी कहते हैं कि बहुत लंबी अवधि में रिटर्न थोड़ा औसत या संतुलित हो सकता है। यानी शुरुआती वर्षों की तरह बहुत अधिक तेजी नहीं दिखती, लेकिन जोखिम भी काफी कम हो जाता है। एसआईपी को सुरक्षित और अनुशासित निवेश का तरीका माना जाता है।

लंबी अवधि ही सफलता की कुंजी

स्टडी संकेत देती है कि एसआईपी में जल्दबाजी नुकसान पहुंचा सकती है, जबकि धैर्य रखने वाले निवेशकों को बेहतर और स्थिर रिटर्न मिलता है। कम समय में जोखिम ज्यादा रहता है, लेकिन 8 से 10 साल के बाद घाटे की संभावना कम हो जाती है। एसआईपी का बड़ा फायदा कंपाउंडिंग होता है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- कंपाउंडिंग की ताकत भविष्य बना सकती है आर्थिक रूप से मजबूत
- निवेश से पूरे हो सकते हैं घर, शिक्षा और रिटायरमेंट के सपने
- एसआईपी और म्यूचुअल फंड युवाओं की पहली पसंद बन रहे

समय पर निवेश ही बनाता है आर्थिक सुरक्षा की मजबूत नींव, छोटी बचत और लंबी अवधि से तैयार हो सकती है बड़ी पूंजी

आज का निवेश, कल की सुरक्षा पेड़ की तरह छाया देता है पैसा

"बच्चों की पढ़ाई, घर खरीदना, रिटायरमेंट, मेडिकल सुरक्षा, विदेश यात्रा या आर्थिक स्वतंत्रता। जब लक्ष्य स्पष्ट होते हैं, तो निवेश की रणनीति बनाना आसान हो जाता है। इसके साथ ही निवेश में सबसे महत्वपूर्ण चीज है अनुशासन। बहुत से लोग शुरुआत तो कर देते हैं, लेकिन कुछ समय बाद निवेश बंद कर देते हैं। यह सबसे बड़ी गलती मानी जाती है। निवेश को नियमित आदत बनाना जरूरी है।

आज के दौर में आर्थिक सुरक्षा हर व्यक्ति की सबसे बड़ी जरूरत बन चुकी है। बढ़ती महंगाई, अनिश्चित नौकरियां, महंगी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं ने लोगों को भविष्य को लेकर अधिक गंभीर बना दिया है। ऐसे समय में निवेश केवल अमीर लोगों की आदत नहीं, बल्कि हर व्यक्ति की जरूरत बन गया है। विशेषज्ञ मानते हैं कि निवेश एक पेड़ की तरह होता है। यदि आज इसके बीज बोए जाएं और समय-समय पर इसकी देखभाल की जाए, तो यही पेड़ भविष्य में छाया, फल और सुरक्षा प्रदान करता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार युवाओं को कम उम्र से ही निवेश की शुरुआत करने की सलाह देते हैं। अक्सर लोग सोचते हैं कि निवेश का मतलब केवल शेयर बाजार में पैसा लगाना है, जबकि ऐसा नहीं है। निवेश का अर्थ है अपने पैसे को ऐसे साधनों में लगाना, जहां वह समय के साथ बढ़ सके और भविष्य में आर्थिक मजबूती दे सके। यह शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड, फिक्स्ड डिपॉजिट, बॉन्ड, पीपीएफ, सोना, रियल एस्टेट या किसी व्यवसाय में निवेश के रूप में हो सकता है। हर निवेश का उद्देश्य भविष्य में बेहतर रिटर्न और आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करना होता है।

विशेषज्ञों के अनुसार निवेश की शुरुआत हमेशा स्पष्ट लक्ष्य के साथ करनी चाहिए। बिना लक्ष्य के किया गया निवेश अक्सर बीच रास्ते में रुक जाता है या सही दिशा नहीं पकड़ पाता। इसलिए पहले यह तय करना जरूरी है कि निवेश किस उद्देश्य से किया जा रहा है।

निवेश के प्रमुख प्रकार

निवेश मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं। पहला वित्तीय निवेश, जिसमें शेयर, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, एसआईपी और बैंकिंग योजनाएं शामिल हैं। दूसरा वास्तविक निवेश, जिसमें जमीन, मकान, सोना और अन्य भौतिक संपत्तियां आती हैं। तीसरा व्यवसायिक निवेश, जिसमें किसी कारोबार में पूंजी लगाई जाती है। आज युवाओं के बीच एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

कंपाउंडिंग की ताकत बदल सकती है भविष्य

निवेश की दुनिया में कंपाउंडिंग को सबसे बड़ा जादू माना जाता है। इसका अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर कमाई करना शुरू कर देता है। यही कारण है कि छोटी-छोटी रकम भी लंबे समय में बड़ी पूंजी में बदल सकती हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति 25 वर्ष की उम्र से हर महीने पांच हजार रुपये निवेश करना शुरू करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है, तो 60 वर्ष की उम्र तक वह करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकता है। वहीं यदि यही निवेश 40 वर्ष की उम्र से शुरू किया जाए, तो अंतिम राशि काफी कम रह जाएगी।

निवेश क्यों जरूरी है

महंगाई धीरे-धीरे पैसे की कीमत कम करती रहती है। आज जो चीज 100 रुपये में मिलती है, वह कुछ वर्षों बाद 200 या 300 रुपये की हो सकती है। यदि पैसा केवल बचत खाते में पड़ा रहे, तो उसकी वास्तविक वैल्यू घटती जाती है। निवेश इस नुकसान से बचाने का माध्यम बनता है। सही निवेश न केवल पूंजी बढ़ाता है, बल्कि अतिरिक्त आय का जरिया भी बन सकता है। कुछ निवेश साधन टैक्स बचाने में भी मदद करते हैं। इसके अलावा निवेश आर्थिक आत्मनिर्भरता देता है, जिससे व्यक्ति भविष्य की जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहता।

जोखिम को समझना भी बेहद जरूरी

हर निवेश के साथ कुछ न कुछ जोखिम जुड़ा होता है। शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव, आर्थिक मंदी, महंगाई और वैश्विक घटनाएं निवेश को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए निवेश करने से पहले अपनी जोखिम उठाने की क्षमता को समझना जरूरी है। यदि कोई व्यक्ति जोखिम कम लेना चाहता है, तो उसे सुरक्षित निवेश विकल्प चुनने चाहिए। वहीं युवा निवेशक लंबी अवधि के कारण थोड़ा अधिक जोखिम लेकर बेहतर रिटर्न हासिल कर सकते हैं। लेकिन किसी भी निवेश में बिना जानकारी और बिना रिसर्च के पैसा लगाना खतरनाक हो सकता है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेश हमेशा विविध होना चाहिए। यानी सारा पैसा एक ही जगह नहीं लगाना चाहिए। यदि निवेश अलग-अलग क्षेत्रों में किया जाए, तो जोखिम कम हो जाता है। यही कारण है कि कहा जाता है कि "सभी अंडे एक टोकरी में नहीं रखने चाहिए।"

डिजिटल दौर में सावधानी भी जरूरी

आज ऑनलाइन निवेश तेजी से बढ़ रहा है। मोबाइल ऐप और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने निवेश को आसान बना दिया है। लेकिन इसके साथ साइबर ठगी और फर्जी निवेश सलाह का खतरा भी बढ़ा है। सोशल मीडिया पर कई लोग खुद को निवेश गुरु बताकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश हमेशा विश्वसनीय और रजिस्टर्ड प्लेटफॉर्म के जरिए ही करना चाहिए। किसी भी "गारंटीड रिटर्न" या "दोगुना पैसा" जैसी योजनाओं से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। निवेश से पहले पूरी जानकारी लेना बेहद जरूरी है।

ऐसे करें निवेश की शुरुआत

निवेश शुरू करने के लिए सबसे पहले अपनी आय और खर्च का आकलन करें। इसके बाद हर महीने एक निश्चित राशि निवेश के लिए अलग रखें। इमरजेंसी फंड तैयार करना भी जरूरी है, ताकि अचानक जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़ना न पड़े। इसके अलावा बाजार और निवेश साधनों के बारे में लगातार सीखते रहना चाहिए। अखबार पढ़ना, वित्तीय किताबें समझना और विशेषज्ञों की सलाह लेना फायदेमंद हो सकता है।

संयम के साथ किया गया एसआईपी में निवेश बना सकता है करोड़पति

बिना लोन के भी पूरा हो सकता है कार और मकान का सपना

जानकारी | बिजनेस डेस्क

"अगर आपको पूरी तरह से लार्ज-कैप इंडेक्स में ही निवेश करना है, तब तो आपके लिए सिर्फ निफ्टी 50 इंडेक्स फंड ही काफी है। या फिर आप निफ्टी 100 इंडेक्स फंड को भी देख सकते हैं, जिसका 85 फीसदी एलोकेशन निफ्टी 50 में और बाकी 15 फीसदी निफ्टी नेक्स्ट 50 में होता है, लेकिन अगर आप पैसिव फंड्स के जरिए मिड-कैप में निवेश करना चाहते और बेहतर रिटर्न की उम्मीद में ज्यादा रिस्क लेने को तैयार हैं, तो नेक्स्ट 50 और मिडकैप 150 इंडेक्स फंड के बीच किसी एक का चुनाव कर सकते हैं।

आज के समय में कार या मकान खरीदना हर व्यक्ति का सपना होता है। लेकिन बढ़ती कीमतों और महंगे लोन के कारण यह सपना कई लोगों के लिए बोझ बन जाता है। अधिकतर लोग घर या कार खरीदने के लिए बैंक से लोन लेते हैं और फिर वर्षों तक ईएमआई चुकाते रहते हैं। खासकर होम लोन में ब्याज इतना ज्यादा होता है कि कई बार व्यक्ति मूल रकम से लगभग दोगुनी राशि चुका देता है। ऐसे में यदि सही समय पर निवेश की योजना बना ली जाए तो बिना लोन लिए भी कार या मकान खरीदा जा सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि यदि कोई व्यक्ति 10 से 15 साल पहले से योजना बनाकर म्यूचुअल फंड में एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान शुरू करे तो वह बड़ा फंड तैयार कर सकता है। यही फंड भविष्य में कार या मकान खरीदने में मदद कर सकता है। एसआईपी न केवल निवेश की आदत विकसित करती है बल्कि लंबे समय में कंपाउंडिंग का लाभ भी देती है। लोन लेने का सबसे बड़ा नुकसान ब्याज होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति 50 लाख रुपये का होम लोन लेता है तो 20 से 25 वर्षों में उसे लगभग 90 लाख से 1 करोड़ रुपये तक चुकाने पड़ सकते हैं। यानी आधे से ज्यादा पैसा केवल ब्याज के रूप में चला जाता है। कार लोन में भी स्थिति कुछ ऐसी ही रहती है। नई कार खरीदते समय डाउन पेमेंट के बाद कई वर्षों तक ईएमआई भरनी पड़ती है। इससे मासिक बजट पर दबाव बढ़ता है और बचत की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए जो लोग भविष्य की योजना पहले से बनाते हैं, उनके लिए एसआईपी बेहतर विकल्प साबित हो सकती है।

मकान खरीदने के लिए कितनी एसआईपी जरूरी?

अगर लक्ष्य मकान खरीदने का है तो निवेश की राशि बढ़ानी होगी। उदाहरण के तौर पर यदि कोई व्यक्ति हर महीने 30 हजार रुपये की एसआईपी करता है और उसे 12 प्रतिशत का औसत रिटर्न मिलता है, तो 10 वर्षों में करीब 67 लाख रुपये का फंड तैयार हो सकता है। इसमें लगभग 36 लाख रुपये का निवेश और 31 लाख रुपये का रिटर्न शामिल होगा। वहीं यदि निवेश की अवधि 15 वर्ष कर दी जाए तो यही फंड करीब 1.4 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। इतनी रकम में व्यक्ति बिना लोन के घर खरीदने का सपना पूरा कर सकता है।

जल्दी शुरुआत करना क्यों जरूरी?

एसआईपी में सबसे बड़ा फायदा समय का होता है। जितनी जल्दी निवेश शुरू किया जाता है, उतना ज्यादा फायदा कंपाउंडिंग का मिलता है। कंपाउंडिंग का मतलब है कि आपके निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे रिटर्न कमाने लगता है। यदि कोई व्यक्ति 25 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करता है तो उसे कम रकम निवेश करनी पड़ेगी। वहीं 35 या 40 वर्ष की उम्र में वही लक्ष्य पाने के लिए अधिक निवेश करना होगा। इसलिए विशेषज्ञ हमेशा जल्दी शुरुआत करने की सलाह देते हैं।

एसआईपी कैसे करती है मदद

एसआईपी के जरिए हर महीने एक निश्चित रकम म्यूचुअल फंड में निवेश की जाती है। यह निवेश बाजार के उतार-चढ़ाव के बावजूद नियमित रूप से जारी रहता है। लंबी अवधि में यही छोटी-छोटी रकम बड़ा फंड बन जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार इक्विटी म्यूचुअल फंड लंबे समय में औसतन 10 से 15 प्रतिशत तक रिटर्न दे सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अनुशासन के साथ लगातार निवेश करता रहे तो 10 से 15 वर्षों में लाखों या करोड़ों रुपये का फंड तैयार हो सकता है।

20 हजार की एसआईपी से बन सकता है बड़ा फंड

यदि कोई व्यक्ति हर महीने 20 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है, तो 10 वर्षों में उसके पास लगभग 45 लाख रुपये का फंड तैयार हो सकता है। इसमें करीब 24 लाख रुपये उसका कुल निवेश होगा, जबकि लगभग 21 लाख रुपये केवल रिटर्न या ब्याज के रूप में मिलेंगे। इतनी रकम में व्यक्ति आसानी से एक अच्छी और प्रीमियम कार खरीद सकता है।

उतार-चढ़ाव के बीच दमदार साबित हुए फ्लेक्सी कैप फंड

बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच फ्लेक्सी कैप फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। बाजार में अनिश्चितता और उतार-चढ़ाव के दौर में ये फंड निवेशकों के लिए "ऑल वेदर" विकल्प माने जाते हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि फंड मैनेजर को बड़ी, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में बिना किसी तय सीमा के निवेश करने की आजादी होती है। यानी बाजार की स्थिति, आर्थिक हालात और वैल्यूएशन के हिसाब से फंड मैनेजर पोर्टफोलियो का संतुलन बदल सकते हैं। तेजी के दौर में मिड और स्मॉल कैप में अधिक निवेश किया जा सकता है, जबकि गिरावट के समय बड़े और मजबूत शेयरों का सहारा लिया जाता है। यही लचीलापन फ्लेक्सी कैप फंड को अन्य इक्विटी फंड्स से अलग बनाता है। जोखिम के मुकाबले बेहतर रिटर्न देने वाले फ्लेक्सी कैप फंड का विश्लेषण किया गया, जिसमें 6 महीने, 1 साल, 3 साल और 5 साल के रोलिंग रिटर्न के साथ शार्प, सॉर्टिनो और स्टैंडर्ड डिविएशन जैसे जोखिम संकेतकों को आधार बनाया गया।

एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड

जनवरी 1995 में शुरू हुआ यह फंड लंबे समय से निवेशकों के बीच भरोसेमंद माना जाता है। फंड की रणनीति मजबूत कंपनियों को चुनकर लंबे समय तक बनाए रखने की रही है। पिछले तीन वर्षों में इस फंड ने लगभग 23.2 प्रतिशत सीएजीआर रिटर्न दिया, जबकि इसी अवधि में निफ्टी-500 टीआरआई का रिटर्न करीब 17 प्रतिशत रहा। फंड की खास बात यह है कि इसने कम उतार-चढ़ाव के साथ बेहतर रिटर्न दिया। फंड के प्रमुख निवेशों में आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक, एसबीआई और एसबीआई लाइफ शामिल हैं। सेक्टर के लिहाज से बैंकिंग, ऑटो और हेल्थकेयर में इसका बड़ा निवेश है। पिछले एक साल में फंड ने करीब 75 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप में रखा।

पराग पारिख फ्लेक्सी कैप फंड

यह फंड निवेशकों के बीच सबसे चर्चित फ्लेक्सी कैप फंड में गिना जाता है। मई 2013 में लॉन्च हुए इस फंड की रणनीति वैल्यू इन्वेस्टिंग पर आधारित है। फंड मजबूत कंपनियों में निवेश करता है और विदेशी शेयरों में भी एक्सपोजर देता है। एल्फाबेट, अमेजन, माइक्रोसोफ्ट, और मेटा जैसी वैश्विक कंपनियां इसके पोर्टफोलियो में शामिल हैं। पिछले तीन वर्षों में फंड ने करीब 21.6 प्रतिशत सीएजीआर रिटर्न दिया। सबसे खास बात यह रही कि इसकी वोलैटिलिटी कैटेगरी में सबसे कम रही। शार्प और सॉर्टिनो रेशियो के मामले में भी यह फंड सबसे आगे रहा। फंड का लगभग 64 प्रतिशत हिस्सा लार्ज कैप में, जबकि कुछ हिस्सा इंटरनेशनल इक्विटी और डेट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेशित है।

आईसीआई प्रूडेंसियल फ्लेक्सी कैप फंड

जुलाई 2021 में शुरू हुआ यह फंड अपेक्षाकृत नया है, लेकिन कम समय में मजबूत प्रदर्शन के कारण तेजी से लोकप्रिय हुआ है। फंड की रणनीति मजबूत बिजनेस और उचित वैल्यूएशन वाली कंपनियों में निवेश करने की है। पिछले तीन वर्षों में इस फंड ने करीब 20.4 प्रतिशत सीएजीआर रिटर्न दिया। इसकी वोलैटिलिटी कैटेगरी औसत के बराबर रही, लेकिन जोखिम के मुकाबले रिटर्न बेहतर रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में टीवीएस मोटर, आईसीआईसीआई बैंक, मारूति सुजुकि और एवेन्यू सुपरमार्ट शामिल हैं। वर्तमान में इसका करीब 61 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप व करीब 25 प्रतिशत स्मॉल कैप में है।

क्यों खास हैं फ्लेक्सी कैप फंड

फ्लेक्सी कैप फंड की सबसे बड़ी ताकत उनकी लचीलापन वाली रणनीति है। बाजार में तेजी हो या गिरावट, फंड मैनेजर बाजार की स्थिति के अनुसार पोर्टफोलियो में बदलाव कर सकते हैं। इसी वजह से इन्हें लंबी अवधि के निवेश के लिए अच्छा विकल्प माना जाता है। विशेषज्ञों के मुताबिक ये फंड निवेशकों के पोर्टफोलियो का "कोर" हिस्सा बन सकते हैं।

डिजिटल ठगी के जाल से रहें अलर्ट, वरना हो सकता है भारी नुकसान

फर्जी ट्रेडिंग टिप्स से मिनटों में खाली हो सकता है अकाउंट

सावधानी | बिनेस डेस्क

आज के दौर में शेयर बाजार में निवेश करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। मोबाइल ऐप और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने निवेश को आसान बनाया है, लेकिन इसके साथ ही ऑनलाइन ठगी और फर्जी निवेश सलाह का खतरा भी कई गुना बढ़ गया है। खासकर इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, व्हाट्सएप और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर चल रहे ट्रेडिंग चैनल और टिप्स ग्रुप लाखों लोगों को आसान कमाई का सपना दिखाकर जाल में फंसा रहे हैं। कई लोग बिना रिसर्च किए इन प्लेटफॉर्म पर बताए गए शेयरों में पैसा लगा देते हैं और बाद में भारी नुकसान उठाते हैं। हाल ही में एनएसई और सेबी ने निवेशकों को ऐसे फर्जी सोशल मीडिया हैंडल्स और टेलीग्राम चैनलों से सावधान रहने की सलाह दी है। एक्सचेंजों ने स्पष्ट किया है कि कई लोग खुद को ट्रेडिंग एक्सपर्ट, मार्केट गुरु या निवेश सलाहकार बताकर निवेशकों के अकाउंट तक एक्सेस मांगते हैं और बाद में रकम गायब कर देते हैं। कई मामलों में 'डबल पैसा', 'गारंटीड प्रॉफिट', '100 प्रतिशत सटीक कॉल' और 'इंट्राडे में लाखों कमाएं' जैसे झूठे दावे किए जाते हैं।

सोशल मीडिया पर निवेश सलाह के नाम पर बढ़ रहा फ्रॉड

डब्बा ट्रेडिंग बना बड़ा खतरा

डिजिटल फ्रॉड के साथ-साथ डब्बा ट्रेडिंग का नेटवर्क भी तेजी से फैल रहा है। यह पूरी तरह अवैध ट्रेडिंग व्यवस्था है, जिसमें लेन-देन आधिकारिक स्टॉक एक्सचेंज के बाहर किया जाता है। इसमें निवेशकों का पैसा सीधे ठगों के हाथ में चला जाता है और किसी प्रकार की कानूनी सुरक्षा नहीं मिलती। एनएसई ने कई ऐसे प्लेटफॉर्म और मोबाइल नंबरों के खिलाफ चेतावनी जारी की है जो फर्जी ट्रेडिंग सेवाएं चला रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, छोटे शहरों और नए निवेशकों को सबसे ज्यादा निशाना बनाया जा रहा है।

एनएसई और सेबी ने जारी की चेतावनी, निवेशक भी बरतें सावधानी

पोंजी व पिरामिड स्कीम ऑनलाइन

पहले जहां पोंजी और पिरामिड योजनाएं ऑफलाइन चलाई जाती थीं, वहीं अब ये सोशल मीडिया और मोबाइल ऐप्स के जरिए फैल रही हैं। लोगों को कहा जाता है कि वे नए निवेशक जोड़ें और कमीशन कमाएं। शुरुआत में कुछ लोगों को लाभ देकर भरोसा पैदा किया जाता है, लेकिन बाद में पूरी योजना अचानक बंद हो जाती है और निवेशकों का पैसा डूब जाता है। पिछले कुछ वर्षों में देशभर में ऐसे कई ऑनलाइन निवेश घोटाले सामने आ चुके हैं।

बदल रहा निवेश का तरीका

भारत आज दुनिया का चौथा सबसे बड़ा शेयर बाजार बन चुका है। करोड़ों नए निवेशक हर महीने बाजार से जुड़ रहे हैं। डिजिटल इंडिया और ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के विस्तार ने निवेश को घर-घर तक पहुंचा दिया है। लेकिन इसी का फायदा साइबर ठग भी उठा रहे हैं। अब ठगी केवल फोन कॉल तक सीमित नहीं रही, बल्कि एआई जनरेटेड वीडियो, फर्जी स्क्रीनशॉट, नकली प्रॉफिट रिपोर्ट और डीपफेक वीडियो के जरिए लोगों को भ्रमित किया जा रहा है।

क्रिप्टो व विदेशी निवेश के नाम पर ठगी

क्रिप्टोकरेंसी और विदेशी ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म भी ठगों का नया हथियार बन चुके हैं। "एक महीने में पैसा दोगुना", "विदेशी बाजार से रोज कमाई" और "एआई ट्रेडिंग बॉट" जैसे ऑफर देकर लोगों को निवेश के लिए उकसाया जाता है। कई प्लेटफॉर्म बिना किसी रेगुलेशन के काम कर रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर किसी निवेश योजना में अत्यधिक मुनाफे का दावा किया जा रहा है तो निवेशकों को तुरंत सतर्क हो जाना चाहिए।

कैसे बचें डिजिटल निवेश ठगी से

निवेश करने से पहले यह जरूर जांच लें कि सलाह देने वाला व्यक्ति या संस्था सेबी में रजिस्टर्ड है या नहीं। किसी भी अनजान टेलीग्राम चैनल या इंस्टाग्राम पेज पर भरोसा न करें। अपने ट्रेडिंग अकाउंट का पासवर्ड या ओटीपी किसी के साथ साझा न करें। "गारंटीड रिटर्न" और "जोखिम मुक्त निवेश" जैसे दावों से दूरी बनाकर रखें। निवेश हमेशा अपनी समझ और रिसर्च के आधार पर करें। विशेषज्ञ मानते हैं कि शेयर बाजार लंबी अवधि में संपत्ति बनाने का मजबूत माध्यम है, लेकिन बिना जानकारी और लालच में किया गया निवेश लोगों को आर्थिक संकट में भी डाल सकता है। इसलिए सोशल मीडिया के चमकदार विज्ञापनों और फर्जी ट्रेडिंग गुरुओं से सावधान रहना बेहद जरूरी है। समझदारी, धैर्य और सही जानकारी ही सुरक्षित निवेश की सबसे बड़ी कुंजी है।

खबर संक्षेप

अग्रवाल समाज का जांच शिविर आज

फतेहाबाद। अग्रवाल समाज ट्रस्ट द्वारा जनसेवा के उद्देश्य से एक दिवसीय निशुल्क मेडिकल जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन 31 मई रविवार को श्री शिव मंदिर, शिवनगर, भट्टू रोड फतेहाबाद में किया जाएगा। शिविर का समय प्रातः 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक रहेगा। ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज गर्ग ने बताया कि शिविर में गुरुग्राम स्थित मेदांता हॉस्पिटल के विशेषज्ञ चिकित्सक अपनी सेवाएं देंगे। शिविर में हृदय रोग, जोड़ संबंधी समस्याओं तथा सामान्य बीमारियों की जांच एवं परामर्श निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा।

पीर दरगाह पर वार्षिक मेला 16 व 17 जून को

फतेहाबाद। पीर बाबा अकबर शाह जी की दरगाह गांव मढ़ में हर वर्ष की भांति वार्षिक मेले का आयोजन किया जाता है। जानकारी देते हुए पीर बाबा अकबर शाह जी सेवा समिति के सेवादारों ने बताया कि आगामी 16 जून मंगलवार व 17 जून 2026 बुधवार को मेले का आयोजन किया जा रहा है। मेले में प्रसिद्ध कव्वाल कलाकार पीर बाबा की महिमा गुणगान करेंगे। मेले के दौरान गुरु का अटूट लंगर भी चलाया जाएगा।

सावरकर जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

फतेहाबाद। ज्ञान सरोवर लाइब्रेरी में मेरा युवा भारत के तत्वावधान में सावरकर जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं गणमान्य नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुमित कुमार रहे, जबकि अध्यक्षता विकास कुमार लैब असिस्टेंट ने की। वक्ताओं ने सावरकर के जीवन, राष्ट्रभक्ति, स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान तथा समाज सुधार संबंधी कार्यों पर प्रकाश डाला। उपस्थित लोगों ने सावरकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

रिटायर्ड कर्मचारी वेलफेयर एसो. की मासिक बैठक 2 को

फतेहाबाद। ऑल रिटायर्ड कर्मचारी वेलफेयर एसोसिएशन की मासिक बैठक 2 जून मंगलवार को जाट धर्मशाला के पास स्थित पुराना रेस्ट हाऊस, फतेहाबाद में होगी। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान मुंशीराम कम्बोज करेंगे। यह जानकारी देते हुए एसोसिएशन के महासचिव सुभाष चन्द्र चौहान ने बताया कि बैठक में रिटायर्ड कर्मचारियों को 8वें वेतन आयोग का लाभ देने सहित विभिन्न मांगों पर चर्चा की जाएगी। बैठक में सरकार से मांग की जाएगी कि नियमित और सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मिलने वाली एक माह के वेतन के बराबर एलटीसी सुविधा को पुनः शुरू किया जाए।

बेसुध पड़े व्यक्ति को परिवार से मिलवाया

रतिया। रतिया में ट्रैफिक पुलिस के जवानों ने तत्परता और इंसानियत दिखाते हुए सडक़ पर बेसुध पड़े एक व्यक्ति की जान बचाई और उसे सुरक्षित उसके परिवार तक पहुंचाया। पुलिस की इस मुस्तैदी से जहां एक बड़ा सड़क हादसा टल गया, वहीं परिजनों ने भी पुलिस का आभार व्यक्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार, बुढलाडा रोड पर राइडर नंबर-8 पर तैनात एसपीओ गुरप्यार सिंह और एचजीएच मंजीत सिंह यातायात व्यवस्था संभालने के दौरान गश्त पर थे। इसी बीच उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति अत्यधिक नशे की हालत में मिला।

11 केवी लाइन का पोल उखाड़ने का आरोपी काबू

फतेहाबाद। दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम की 11 केवी हाई-टेंशन लाइन का पोल जबरन उखाडने और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के आरोप में पुलिस चौकी बाहमणवाला की टीम ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान रतिया के गांव लाधूवास निवासी जगसीर सिंह के रूप में हुई है। थाना सदर रतिया प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने बताया कि बिजली निगम अर्ध-शहरी उपमंडल रतिया के एसडीओ द्वारा पुलिस को एक आधिकारिक शिकायत दी गई थी।

डीजल, उर्वरक और कृषि लागत में बढ़ोतरी को लेकर किसानों का प्रदर्शन

खरीफ एमएसपी आदेश की प्रतियां जलाकर किसानों ने जताया रोष

हरिभूमि न्यूज ⏭ भट्टूकलां

संयुक्त किसान मोर्चा के देशव्यापी आह्वान पर शनिवार को किसान सभा द्वारा क्षेत्र के गांव जांडवाला बागड़ में केंद्र सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया गया। इस दौरान किसानों ने खरीफ फसलों के एमएसपी से जुड़े सरकारी आदेश की प्रतियां जलाकर अपना रोष प्रकट किया। प्रदर्शन की अध्यक्षता किसान नेता मास्टर हनुमान ने की, जबकि मुख्य वक्ता के तौर पर किसान सभा के जिला प्रधान विष्णुदत्त शर्मा उपस्थित रहे। इस अवसर पर सुभाष भादू, रिछपाल, भरत सिंह, जगदीश, सतबीर सिंह, धर्मपाल, सूरजभान भादू, विजय सिंह, विनोद कुमार, महावीर सिंह, रणधीर सिंह, मोहित सहारण, रामफल भादू, सुनीत कुमार सहित बड़ी संख्या में स्थानीय किसान मौजूद थे।

प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए किसान सभा के जिला प्रधान विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि उर्वरकों और डीजल की बढ़ती कीमतों, कृषि इनपुट लागतों में वृद्धि, खाद की कालाबाजारी और एमएसपी में कटौती के विरोध में यह प्रदर्शन किया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र की एनडीए सरकार इनपुट लागतों में भारी बढ़ोतरी के बावजूद स्वामीनाथन आयोग के सी2+50 प्रतिशत फार्मूले के आधार पर एमएसपी देने से पीछे हट रही है, जो उसकी किसान विरोधी नीति को दर्शाता है। शर्मा ने आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि वर्ष 2026 के अनुमानित लागत आंकड़ों के अनुसार, प्रमुख खरीफ फसलों के लिए घोषित एमएसपी तय फार्मूले से काफी कम है। किसान नेताओं ने मांग की कि सरकार सी2+50 प्रतिशत के आधार पर एमएसपी की कानूनी गारंटी दे और फसलों की सार्वभौमिक खरीद सुनिश्चित करे। इसके साथ ही पेट्रोल-डीजल की कीमतों में की गई बढ़ोतरी को तुरंत वापस लेने, ट्रैक्टर व कृषि कार्यों के लिए टैक्स-फ्री दरों पर डीजल उपलब्ध कराने और न्यूट्रिएंट बेस्ड सब्सिडी व्यवस्था को वापस लेकर उर्वरकों की कीमतें कम करने की मांग भी उठाई गई।

भट्टूकलां। गांव जांडवाला बागड़ में एमएसपी आदेशों की प्रतियां फूंकते किसान।

बढ़ती महंगाई और पेड़ कटाई के विरोध में टोहाना में किसानों ने किया प्रदर्शन

टोहाना। टोहाना में संयुक्त किसान मोर्चा से जुड़े किसानों ने शनिवार को बढ़ती महंगाई और अवैध पेड़ कटाई के खिलाफ प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष लाभ सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों किसानों ने टोहाना पक्का मोर्चा पर केंद्र व राज्य सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और महंगाई की प्रतियां फूंककर विरोध जताया। लाभ सिंह ने कहा कि सरकार आम जनता की परेशानी पर ध्यान नहीं दे रही है। पेट्रोल, डीजल और गैस के दाम लगातार बढ़ रहे हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें गिरी हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार केवल कॉरपोरेट घरानों और बड़े उद्योगपतियों को लाभ पहुंचा रही है, जिससे आम आदमी महंगाई की मार झेल रहा है। किसान नेताओं ने चेतावनी दी कि जब तक पेट्रोल, डीजल और गैस सिलेंडर के दाम कम नहीं किए जाते, उनका आंदोलन जारी रहेगा। प्रदर्शन में शामिल किसानों का कहना था कि सरकार का काम जनता को राहत देना है, लेकिन वह इसके बजाय महंगाई से लोगों को परेशान कर रही है। किसान नेताओं ने मांग की कि, पेड़ कटाई मामले में टोहाना वन विभाग में तैनात सभी संबंधित अधिकारियों को तत्काल निलंबित कर उनका स्थानांतरण किया जाए। साथ ही, इस मामले की जांच किसी निष्पक्ष एजेंसी से कराई जाए। नेताओं ने इसे लाखों रुपए का एक बड़ा और लगातार चल रहा घोटाला बताया। गौरतलब है कि वन विभाग ने इस मामले में आरा संचालक प्रिंस सहित तीन लोगों पर केस दर्ज कराया है। इसके बाद प्रिंस चावला ने वन दरोगा सुरेंद्र की कॉल रिकॉर्डिंग का दावा करते हुए आरोप लगाया था कि विभाग की मिलीभगत से ही पेड़ कटवाए गए हैं। प्रिंस ने अधिकारियों पर लाखों रुपए के पेड़ कटवाने के आरोप भी लगाए हैं। अगर सरकार ने जल्दी कार्रवाई नहीं की तो आंदोलन को तेज किया जाएगा। किसान नेताओं ने सरकार से मांग की कि दोषियों पर सख्त कार्रवाई हो, निर्दोष मजदूरों को परेशान न किया जाए और अवैध कटाई पर तुरंत रोक लगे।

आईपीएल सट्टेबाजी का अड्डा बेनकाब

रात के अंधेरे में चल रहा था करोड़ों के खेल का नेटवर्क, 3 बुकी दबोचे

- मोहम्मदपुर रोही के खेत बने थे ऑनलाइन सट्टे का सेंटर

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

आईपीएल के रोमांच के बीच फतेहाबाद पुलिस ने ऑनलाइन क्रिकेट सट्टेबाजी के एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश किया है। सीआईए फतेहाबाद की टीम ने मोहम्मदपुर रोही क्षेत्र में खेतों के बीच बनाए गए अस्थायी ठिकाने पर छापा मारकर तीन बुकी को रंगे हाथों गिरफ्तार किया। आरोप है कि आरोपी मोबाइल फोन के जरिए राजस्थान रॉयल्स और गुजरात टाइटंस के मुकाबले पर ऑनलाइन खाईवाली कर रहे थे और दूर-दूर से लोगों की रकम दांव पर लगवाई जा रही थी। सूत्रों के अनुसार खेतों में रात के समय बिजली की रोशनी में सट्टेबाजी का पूरा खेल संचालित किया जा रहा था। पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि मैच के दौरान लगातार दांव लगाए जा रहे हैं और मौके पर कई मोबाइल फोन के जरिए सट्टे का हिसाब-किताब रखा जा रहा है। सूचना मिलते ही सीआईए टीम ने बिना समय गंवाए दबिश दी और तीनों आरोपियों को मौके से काबू कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान डीएसपी रोड निवासी हितेश उर्फ हन्नी, मोहम्मदपुर रोही निवासी अमन जांगू तथा शक्ति नगर निवासी संदीप उर्फ गोलू के रूप में हुई है।

आईफोन समेत 5 मोबाइल, रजिस्टर और नकदी बरामद

पुलिस की तलाशी में आरोपियों के कब्जे से एक आईफोन सहित पांच मोबाइल फोन, सट्टेबाजी का हिसाब-किताब दर्ज रजिस्टर, पेन तथा 3,710 रुपये नकद बरामद हुए। शुरुआती जांच में सामने आया है कि मैच के हर ओवर और हर गेंद पर दांव लगाए जा रहे थे तथा मोबाइल फोन के जरिए अन्य लोगों से भी संपर्क किया जा रहा था।

खेतों से चल रहा था हाईटेक सट्टा

पुलिस अधिकारियों का मानना है कि आरोपी सुनसान स्थान का फायदा उठाकर कार्रवाई से बचने की कोशिश कर रहे थे। खेतों में बनाए गए ठिकाने से ऑनलाइन नेटवर्क के जरिए सट्टा संचालित किया जा रहा था। अब पुलिस बरामद मोबाइल फोन की जांच कर यह पता लगाने में जुटी है कि इस नेटवर्क से और कौन-कौन लोग जुड़े हुए हैं तथा सट्टेबाजी का कारोबार कितना बड़ा था।

मामला दर्ज, जांच जारी

सीआईए प्रभारी उप-निरीक्षक वेदपाल ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ थाना सदर फतेहाबाद में हरियाणा प्रिवेंशन ऑफ पब्लिक गैंबलिंग एक्ट-2025 के तहत मामला दर्ज किया गया है। पूछताछ के बाद उन्हें नियमानुसार पुलिस जमानत पर रिहा किया गया, लेकिन नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों तक पहुंचने के लिए जांच जारी है।

मोदी सरकार के 12 वर्ष पूरे होने पर भाजपा चलाएगी विशेष अभियान, तैयारियों को लेकर बैठक

- इस उपलक्ष्य में भाजपा 5 से 21 जून तक पूरे जिले में विशेष अभियान चलाएगी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भाजपा 5 से 21 जून तक पूरे जिले में विशेष अभियान चलाएगी। इन कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर भाजपा जिला कार्यालय में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा ने की, जबकि अभियान के प्रदेश सह संयोजक विकास दहिया विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के नवनियुक्त चेयरमैन राजपाल बैनीवाल का भी अभिनंदन किया गया।

बैठक में आगामी अभियानों की रूपरेखा तय की गई, जिसके तहत जिले भर में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसके अलावा 8 से 12 जून तक मीडिया संवाद कार्यक्रम होगा, जिसमें मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री मीडिया से रूबरू होंगे।

8 से 14 जून तक विशेष जनसंपर्क अभियान के तहत सांसद, विधायक और पदाधिकारी वृक्षारोपण, स्वच्छता और प्रगति पथ यात्रा में भाग लेंगे। 12 से 20 जून तक जन कल्याण शिविरों का आयोजन कर सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों का पंजीकरण किया जाएगा।

इसके अलावा प्रबुद्ध वर्ग की संगोष्ठियां, उपलब्धियों पर आधारित प्रदर्शनियां और 21 जून को मंडल स्तर पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने कहा कि मोदी सरकार के 12 वर्षों का कार्यकाल विकास, सुशासन और जनकल्याण के लिए ऐतिहासिक रहा है। सरकार की योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचा है। प्रदेश सह संयोजक विकास दहिया ने कहा कि यह अभियान केवल उपलब्धियों को बताने का नहीं, बल्कि विकसित भारत के निर्माण में जनभागीदारी को मजबूत करने का माध्यम है। पार्टी कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों को केंद्र की योजनाओं से जोड़ेंगे।

फतेहाबाद। बैठक को संबोधित करते भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा। फोटो : हरिभूमि

विशेष लोक अदालत : 94.77 लाख रुपये की राशि पर बनी सहमति

102 चेक बाउंस मामलों का निपटारा

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

हरियाणा राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण के निर्देशानुसार फतेहाबाद, रतिया और टोहाना में शनिवार को चेक बाउंस मामलों की विशेष लोक अदालत आयोजित की गई। इसमें धारा 138 एनआई एक्ट से संबंधित लंबित मामलों और अपीलों की सुनवाई की गई। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी सुयशा जावा ने बताया कि विभिन्न अदालतों में लंबित 383 मामलों को विशेष लोक अदालत में रखा गया, जिनमें से 102 मामलों का आपसी सहमति से निपटारा किया गया। इन मामलों में 94 लाख 77 हजार रुपये की राशि पर समझौता हुआ। उन्होंने बताया कि विशेष लोक अदालत में दोनों पक्षों की सहमति से मामलों का समाधान किया गया। इससे लंबित मामलों के निपटारे में तेजी आई है।

पूर्व सरपंच जोगिन्द्र सिवाच बने कांग्रेस पंचायती राज प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष

फतेहाबाद। कांग्रेस हाईकमान द्वारा गांव गोरखपुर के पूर्व सरपंच एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जोगिन्द्र सिवाच को पंचायती राज प्रकोष्ठ का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया है। अपनी नियुक्ति पर जोगिन्द्र सिवाच कांग्रेस के जिला कार्यालय में पहुंचे और अपनी नियुक्ति पर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष अरविन्द्र शर्मा व विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया को मिठाई खिलाकर कांग्रेस हाई कमान का आभार प्रकट किया। अरविन्द्र शर्मा व विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया ने भी जोगिन्द्र सिवाच को बधाई देते हुए कहा कि कांग्रेस हाई कमान ने एक पंचायती व्यक्ति को उनकी योग्यता के अनुसार जिम्मेदारी देकर संगठन को मजबूती देने की दिशा में काम किया है। पंचायती राज प्रकोष्ठ कांग्रेस का महत्वपूर्ण अंग हैं। इस अवसर पर जिला पार्षद जगमेर सिवाच, कौर सिंह सिरढ़ान, सोनू दहमन आदि मौजूद रहे।

रोहतास जांगड़ा श्रम कल्याण बोर्ड के चेयरमैन नियुक्त, खुशी का माहौल

रानियां। भाजपा नेता रोहतास जांगड़ा को हरियाणा श्रम कल्याण बोर्ड का चेयरमैन नियुक्त किए जाने पर रानियां सहित पूरे क्षेत्र में खुशी और उत्साह का माहौल है। श्रमिक हितों के लिए समर्पित नेतृत्व के रूप में उनकी नियुक्ति को प्रदेश सरकार के श्रमिक कल्याण के प्रति संकल्प का प्रतीक माना जा रहा है। नियुक्ति की घोषणा होते ही जांगड़ा परिवार के प्रतिष्ठान पर बधाई देने वालों का तांता लग गया। विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पहुंचकर उन्हें शुभकामनाएं दीं और इस नियुक्ति को क्षेत्र के लिए गौरव एवं सम्मान का विषय बताया। रोहतास जांगड़ा ने अपनी नियुक्ति पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा उन पर जताया गया विश्वास उनके लिए सम्मान के साथ-साथ एक बड़ी जिम्मेदारी भी है। उन्होंने कहा कि वे श्रमिकों के कल्याण, सामाजिक सुरक्षा तथा उनके अधिकारों की रक्षा के लिए पूरी निष्ठा, पारदर्शिता और ईमानदारी से कार्य करेंगे।

- विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने दीं शुभकामनाएं

राजपाल बैनीवाल किसान प्राधिकरण व चंद्रप्रकाश सफाई आयोग के बने मेंबर

फतेहाबाद। प्रदेश सरकार की ओर से नए चेयरमैन और अलग-अलग प्राधिकरणों के सदस्य बनाने की लिस्ट में दो नाम फतेहाबाद जिले से भी लिए गए हैं। फतेहाबाद जिले से राजपाल बैनीवाल और चंद्रप्रकाश बोस्ती को भी सरकार में साझेदारी नसीब हुई है। राजपाल बैनीवाल को हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण जबकि चंद्रप्रकाश बोस्ती को हरियाणा सफाई कर्मचारी आयोग का सदस्य बनाया है। दोनों ही लंबे समय से भारतीय जनता पार्टी के संगठन के साथ जुड़े हुए हैं। राजपाल बैनीवाल भट्टू जबकि चंद्रप्रकाश भूना क्षेत्र से आते हैं। अपनी नियुक्ति पर दोनों ही बीजेपी नेताओं ने राष्ट्रीय व प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त किया है। राजपाल बैनीवाल भाजपा के पशुपालन एवं डेयरी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक के रूप में काम कर रहे हैं। राजपाल आरएसएस से भी जुड़े रहे हैं। राजपाल अविवाहित हैं। साल 2019 और साल 2024 में फतेहाबाद विधानसभा क्षेत्र से पार्टी की टिकट की दावेदारी भी जताई थी। चंद्रप्रकाश बोस्ती भूना क्षेत्र के गांव बोस्ती निवासी चंद्रप्रकाश बीजेपी के प्रमुख एससी नेताओं में शामिल हैं। वह कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी के बेहद नजदीकी हैं।

- नियुक्ति पर दोनों ही बीजेपी नेताओं ने राष्ट्रीय व प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त

गहलोत ने चौधरी चरण सिंह के जीवन संस्मरण सुनाए

सिरसा। आर्यसमाज बेगू रोड सिरसा में साप्ताहिक हवन यज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन समाज के कार्यकारी प्रधान भूप सिंह गहलोत के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि पर आर्यसमाजियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह एक महान विचारक, ईमानदार व किसान, कमेरे वर्ग के सच्चे हितैषी थे। वे ग्रामीण परिवेश में एक गरीब में पले बढ़े होने के कारण वे किसानों व गरीबों की समस्याओं को भली प्रकार समझते थे। इसलिए वे जीवन पर्यंत किसानों व कमेरा वर्ग के हित में कार्य करते हुए उनके उत्थान के लिए संघर्षशील रहे। चौधरी चरण सिंह का मानना था कि देश का विकास गांव व खेत खलिहानों से होकर गुजरता है। उनका मानना था कि किसानों की आर्थिक स्थिति ठीक होगी तो देश की उन्नति होगी। इसलिए उन्होंने किसानों के जीवन को बेहतर बनाने का हरसंभव प्रयास किया। उनके द्वारा दिखाए मार्ग पर चलकर ईमानदारी व निष्ठापूर्वक कार्य करते हुए देश प्रदेश तथा गरीब किसानों की प्रगति में अपना योगदान देना होगा।

- चौधरी चरण सिंह एक महान विचारक, ईमानदार व किसान, कमेरे वर्ग के सच्चे हितैषी थे

देसी गाय और मुर्राह भैंस पालकों को सरकार दे रही 40 हजार तक प्रोत्साहन

सिरसा। हरियाणा सरकार ने प्रदेश में स्वदेशी गौवंश के संरक्षण, संवर्धन और उच्च दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्वदेशी गौवंश संरक्षण एवं विकास (गोसंवर्धन) तथा एकीकृत मुर्राह विकास योजना लागू की है। इस योजना के तहत राज्य के पात्र पशुपालकों को उनकी उच्च दुग्ध उत्पादन वाली देसी गायों और मुर्राह भैंसों पर प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। योजना का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी नस्लों की संख्या बढ़ाना, पशुपालकों की आय में वृद्धि करना तथा डेयरी क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाना है। योजना के अनुसार केवल हरियाणा राज्य के निवासी पशुपालक ही इसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे। आवेदक की आयु 18 वर्ष या इससे अधिक होना अनिवार्य है। यह योजना व्यक्तिगत लाभार्थियों के लिए है, इसलिए किसी समूह, संस्था, फर्म या संगठन को इसके अंतर्गत आवेदन करने की अनुमति नहीं होगी। प्रत्येक पात्र आवेदक अधिकतम चार दुधारू पशुओं पर ही प्रोत्साहन राशि प्राप्त कर सकेगा। योजना के अंतर्गत केवल हरियाणा, साहीवाल और बेलाही नस्ल की देसी गायों तथा मुर्राह नस्ल की भैंसों को शामिल किया गया है।

- योजना का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी नस्लों की संख्या बढ़ाना, पशुपालकों की आय में वृद्धि करना है

लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे जोड़े पर हमले के दो आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

थाना सदर रतिया पुलिस ने एक घर की दीवार लांघकर अंदर घुसने और लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे एक जोड़े पर लाठी-डंडों से हमला करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान फतेहाबाद जिले के गांव भुथन खुर्द निवासी मलकीत सिंह और मनजीत सिंह के रूप में हुई है। थाना सदर रतिया प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने बताया कि एक महिला ने थाने में शिकायत दर्ज कराई थी कि वह अपने पति की नशा करने की आदत के कारण दो बच्चों को उसके पास छोडक़र पिछले कुछ समय से गांव मिराना में मलकीत सिंह के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही थी। इसी बात की रंजिश रखते हुए नामजद आरोपियों ने घर में घुसकर महिला और उसके साथी मलकीत सिंह के साथ मारपीट की, जिससे दोनों को गंभीर चोटें आईं। शोर मचाने पर आरोपी जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए थे। पीड़िता के बयान के आधार पर थाना सदर रतिया में भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था।

- आरोपियों की पहचान फतेहाबाद जिले के गांव भुथन खुर्द निवासी मलकीत सिंह और मनजीत सिंह के रूप में हुई

पुलिस लाइन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सम्मान में विदाई समारोह

पुलिस सेवा समाज सेवा का सशक्त माध्यम : एसपी

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

पुलिस लाइन में शनिवार को पुलिस विभाग सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आदर्श दीप सिंह ने सेवानिवृत्त कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि पुलिस सेवा केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि समाज सेवा का सशक्त माध्यम है, जिसमें त्याग, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा की विशेष आवश्यकता होती है। एएसपी आदर्श दीप सिंह ने कहा कि पुलिसकर्मी सर्दी, गर्मी और बारिश जैसी हर परिस्थिति में अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए आमजन को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस सेवा के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कई बार अपने परिवार से दूर रहकर भी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता है, फिर भी वे पूरी ईमानदारी और लगन से अपने दायित्व निभाते हैं। उन्होंने सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपने अनुभव, ज्ञान और ऊर्जा का उपयोग सामाजिक कार्यों में करते हुए समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाएं। साथ ही उन्होंने कहा कि उत्कृष्ट कार्यशैली और ईमानदारी ही विभाग की सकारात्मक छवि को मजबूत बनाती है।

सिरसा। एएसपी आदर्श दीप सिंह ने सेवानिवृत कर्मचारियों को बधाई देते हुए।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर ट्रैफिक थाना प्रभारी निरीक्षक धर्मचंद, ई/उप निरीक्षक सुभाष चंद्र, जोगिंदर सिंह, हवा सिंह, हंसराज एवं शेर सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह में डीएसपी मुख्यालय सुखबीर सिंह, जिला कल्याण निरीक्षक सीमा सोढ़ी सहित अन्य पुलिस अधिकारी, कर्मचारी एवं परिजन उपस्थित रहे।

चारधाम और अमरनाथ यात्रा के लिए भी बढ़ी पूछताछ रेलवे टिकटों की मांग में 20 प्रतिशत तक उछाल

छुट्टियां शुरू होते ही पहाड़ों की ओर दौड़े जिलेवासी, मनाली-मसूरी की टैक्सियां फुल, शिमला रूट पर बढ़ी बसें; पहाड़ी मार्गों पर जाम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

ग्रीष्मकालीन अवकाश शुरू होते ही जिले के लोगों का रुख पहाड़ों की ओर हो गया है। भीषण गर्मी और लगातार बढ़ते तापमान से राहत पाने के लिए परिवार मनाली, शिमला, मसूरी, कुल्लू और उत्तराखंड के अन्य पर्यटन स्थलों की ओर जाने की तैयारी में जुट गए हैं। इसका असर जिले के ट्रैवल कारोबार, रेलवे और बस सेवाओं पर साफ दिखाई देने लगा है। टूर एंड ट्रैवल्स संचालकों के दफ्तरों में बुकिंग और पूछताछ करने वालों की भीड़ बढ़ गई है, जबकि कई टैक्सी चालकों की गाडिय़ां पहले से ही आगामी दो सप्ताह तक बुक हो चुकी हैं। ट्रैवल एजेंटों का कहना है कि इस बार छुट्टियों में सबसे अधिक मांग हिमाचल और उत्तराखंड के पर्यटन स्थलों की है। ग्राहक सबसे पहले मनाली, मसूरी और शिमला के पैकेज की जानकारी ले रहे हैं। इसके अलावा चारधाम यात्रा, अमरनाथ यात्रा और धार्मिक पर्यटन स्थलों के लिए भी लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। कई श्रद्धालु अभी से दिल्ली और चंडीगढ़ से हवाई यात्रा के लिए टिकटें बुक करवा रहे हैं।

5 जून के बाद अधिकांश गाड़ियों की एडवांस बुकिंग

बुकिंग के लिए तैयार खड़ी गाडिय़ां।

मनाली और मसूरी पहली पसंद, गोवा की मांग

फतेहाबाद के अधिकांश परिवार गर्मी से राहत पाने के लिए ठंडे और बर्फीले इलाकों को प्राथमिकता दे रहे हैं। ट्रैवल एजेंटों के अनुसार मनाली, मसूरी, शिमला और कुल्लू इस बार सबसे ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। कुछ लोग गोवा और समुद्री तटों की ओर भी जाने की योजना बना रहे हैं, लेकिन पहाड़ी पर्यटन स्थलों की तुलना में उनकी संख्या काफी कम है। यात्री अपनी सुविधा और बजट के अनुसार फ्लाइट, ट्रेन, बस और निजी टैक्सियों का विकल्प चुन रहे हैं। परिवारों के साथ-साथ युवाओं के समूह भी एडवेंचर ट्रिप और वीकेंड टूर की बुकिंग करवा रहे हैं।

5 जून के बाद अधिकांश टैक्सियां फुल

टूर एंड ट्रैवल्स कारोबार से जुड़े लोगों के अनुसार वर्तमान में तत्काल गाडिय़ां उपलब्ध हैं, लेकिन 5 जून के बाद स्थिति बदल सकती है। कई सिंगल टैक्सी संचालकों के पास पहले से ही 10 से 15 दिन तक की एडवांस बुकिंग हो चुकी है। सात सीटर एर्टिगा जैसी गाडिय़ों के लिए पहाड़ी क्षेत्रों में प्रतिदिन करीब 7000 रुपए का चार्ज लिया जा रहा है। वहीं किलोमीटर के आधार पर किराया तय करने वाले संचालक मनाली और शिमला जैसे पहाड़ी मार्गों के लिए लगभग 20 रुपए प्रति किलोमीटर तथा सामान्य क्षेत्रों के लिए 16 रुपए प्रति किलोमीटर तक किराया ले रहे हैं।

पहाड़ों पर जाम-लैंडस्लाइड का खतरा बढ़ा

पर्यटन सीजन के चरम पर पहुंचने के साथ हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के प्रमुख मार्गों पर ट्रैफिक दबाव भी बढ़ रहा है। मनाली, शिमला, नारकंडा, सोलन, कुल्लू और मसूरी जाने वाले मार्गों पर कई स्थानों पर लंबा जाम लगने की स्थिति बन रही है। वहीं मानसून की दस्तक के साथ पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन (लैंडस्लाइड) और पत्थर गिरने की घटनाओं का खतरा भी बढ़ जाता है। ट्रैवल एजेंट यात्रियों को सलाह दे रहे हैं कि यात्रा पर निकलने से पहले मौसम की जानकारी अवश्य लें, वाहन की तकनीकी जांच करवा लें तथा पहाड़ी मार्गों पर रात के समय अनावश्यक यात्रा से बचें। चारधाम यात्रा मार्गों पर भी मौसम खराब होने

स्कॉर्पियो व इनोवा की डिमांड बढ़ी

परिवारों और बड़े समूहों की यात्रा को देखते हुए बड़ी गाडिय़ों की मांग भी तेजी से बढ़ी है। ट्रैवल एजेंसी संचालकों के अनुसार स्कॉर्पियो, इनोवा और अन्य एसयूवी वाहनों की बुकिंग लगातार बढ़ रही है।

शिमला रूट पर रोडवेज ने बढ़ाई बसें

यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए हरियाणा रोडवेज ने शिमला रूट पर अतिरिक्त बस सेवा शुरू की है। इससे यात्रियों को सीट उपलब्ध कराने और भीड़ कम करने में मदद मिल रही है। दूसरी ओर जाखल और टोहाना रेलवे स्टेशनों से उत्तर भारत के पर्यटन स्थलों की ओर जाने वाली ट्रेनों में भी टिकट बुकिंग बढ़ी है। रेलवे सूत्रों के अनुसार सामान्य दिनों में जहां करीब 200 टिकट प्रतिदिन बिकते थे, वहीं अब यह संख्या बढ़कर 260 से 300 तक पहुंच गई है। यानी छुट्टियों के साथ बुकिंग में लगभग 20 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

धार्मिक पर्यटन रफ्तार पर

गर्मी की छुट्टियों के साथ धार्मिक पर्यटन भी तेजी पकड़ रहा है। चारधाम यात्रा के अलावा अमरनाथ यात्रा, सालासर धाम और खाटू श्याम के लिए भी जिले से रोजाना बड़ी संख्या में श्रद्धालु रवाना हो रहे हैं। फतेहाबाद से शेयरिंग बसों और निजी वाहनों के जरिए श्रद्धालुओं का आवागमन लगातार बढ़ रहा है।

खबर संक्षेप

चोर गिरफ्तार, चार मोटरसाइकिल बरामद

सिरसा। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बाइक चोरी की वारदातों को अंजाम देने वाले शातिर चोर को चोरीशुदा बाइक सहित पुलिस ने गिरफ्तार किया है। एबीवीटी स्टाफ प्रभारी गुरमेश ने बताया कि हुड्डा सेक्टर निवासी दीदार सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि सुरतगढिया चौका सिरसा के पास खड़ा कर किसी काम से चला गया था। कुछ समय बाद वापस आकर देखा तो अज्ञात युवक मौके का फायदा उठाते हुए बाइक लेकर मौका से फरार हो गए।

विद्यार्थियों ने उठाया एजुकेशन मेले का लाभ

सिरसा। श्री अग्रवाल सेवा सदन में आयोजित एडमिशन व एजुकेशन मेले में सैकड़ों विद्यार्थियों ने अपने अभिभावकों के साथ शिरकत की। वायो मीडिया ग्रुप्स से योगेश कौशिक ने बताया कि इस मेले में 25 से अधिक प्रसिद्ध यूनिवर्सिटीज व कॉलेजों के एक्सपर्ट ने भाग लेते हुए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए उनकी शंकाओं का भी निवारण किया। जिन छात्रों ने 12वीं कक्षा में 70 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी छात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। भविष्य के

आईपीएल में ऑनलाइन सट्टा लगाते बुकी गिरफ्तार

फतेहाबाद। सीआईए टोहाना की टीम ने जवाहर गली स्थित एक रिहायशी मकान में चल रहे ऑनलाइन क्रिकेट सट्टेबाजी नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने मौके से एक बुकी को आईपीएल मैच पर सट्टा खाईवाली करते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान टोहाना के वार्ड नंबर-19, जवाहर गली निवासी अंचित कुमार के रूप में हुई है।

हेरोइन सहित बाइक सवार तीन युवक पकड़े

सिरसा। पुलिस ने गांव शाहपूर बेगू क्षेत्र से बाइक सवार तीन युवकों को 7 ग्राम 340 मिलीग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए सिरसा प्रभारी रविंदर कुमार ने बताया कि आरोपियों की पहचान भरत ,रोहित व गुरप्रीत सिंह के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि पुलिस टीम गश्त के दौरान सामने से बाइक सवार तीन युवक आते दिखाई दिए जो कि पुलिस की गाड़ी को देखकर अचानक बाइक को वापस मोडक़र भागने का प्रयास करने लगे।

दोपहर में छाए बादल, आधे घंटे की बरसात ने दिलाई गर्मी से राहत

नौतपा में बदला मौसम, आंधी के बाद झमाझम बारिश, तापमान 8 डिग्री लुढ़का

- अगले दो दिन भी मौसम में बदलाव के आसार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

नौतपा के बीच शनिवार को मौसम ने अचानक करवट ले ली। सुबह से तेज धूप और उमस के बीच दोपहर बाद आसमान में बादल छा गए। करीब 12 बजे के बाद मौसम का मिजाज बदलना शुरू हुआ और तेज धूलभरी आंधी चलने लगी। इसके बाद दोपहर करीब 2 बजे बारिश शुरू हुई, जो लगभग आधे घंटे तक जारी रही। बारिश और ठंडी हवाओं के चलते लोगों को भीषण गर्मी से बड़ी राहत मिली। फतेहाबाद में शनिवार को 8 एमएम बरसात दर्ज की गई। मौसम में आए बदलाव का असर तापमान पर भी दिखाई दिया और एक ही दिन में अधिकतम तापमान में करीब 8 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। बता दें कि मौसम विभाग ने पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से 29 मई को मौसम बदलने की भविष्यवाणी की थी। 29 मई को जिले के भट्टू क्षेत्र सहित अनेक गांवों में तेज धूलभरी आंधी से सैंकड़ों पेड़, बिजली के खंबे व ट्रांसफार्मर टूट कर गिर गए थे। शनिवार को जिले का अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। शनिवार दोपहर बाद मौसम सुहावना हो गया। बारिश के बाद सडक़ों और बाजारों में भी चहल-पहल बढ़ गई तथा लोगों ने गर्मी से मिली राहत का आनंद लिया। हालांकि बारिश शुरू होते ही वातावरण में फैली धूल बैठ गई और मौसम खुशनुमा हो गया। किसानों के अनुसार हल्की बारिश से खेतों में खड़ी कुछ फसलों और पशुओं को भी राहत मिली है।

शहर में हुई बरसात

मौसम की प्रमुख बातें

- दोपहर में चली तेज धूलभरी आंधी
- करीब आधे घंटे तक हुई बारिश
- अधिकतम तापमान 34 डिग्री, न्यूनतम 24 डिग्री दर्ज
- एक दिन में तापमान में करीब 8 डिग्री की गिरावट
- पश्चिमी विक्षोभ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन का असर
- 1 जून तक बादल, तेज हवाएं और हल्की बारिश की संभावना

पश्चिमी विक्षोभ का दिखा असर

कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार प्रदेश में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ और राजस्थान के ऊपर बने साइक्लोनिक सर्कुलेशन के प्रभाव से मौसम में यह बदलाव देखने को मिल रहा है। विभाग ने पहले ही 29 मई की रात से 1 जून तक प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में आंशिक बादल छाए रहने, धूलभरी हवाएं चलने तथा कहीं-कहीं गरज-चमक के साथ बूंदाबांदी या हल्की बारिश की संभावना जताई थी। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले दो दिनों तक भी मौसम में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है।

तेज आंधी से जनजीवन अस्त-व्यस्त

सिरसा/चोपटा। जिला में शनिवार को तेज अंधड़ के कारण सैकड़ों पेड़ व बिजली के पोल टूट कर सडक़ों पर गिर गए, जिससे जिले के कई क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बाधित रही। सिरसा व ओटू क्षेत्र में पांच एमएम बरसात हुई। बारिश से तापमान में गिरावट देखने को मिली, जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। धूल भरी आंधी से जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। दो घंटे तक चली धूल भरी आंधी से खेतों में खड़े पेड़ टूट कर गिर गए जिससे यातायात बाधित हुआ। इसके अलावा खेतों में लगे सौर ऊर्जा संयंत्रों को भी भारी नुकसान पहुंचा है।किसान साहब सिंह, नाहर सिंह, मलकीत सिंह, सरदूल सिंह, जोगिंदर सिंह और सोहन लाल ने बताया कि अचानक मौसम खराब होने के बाद तेज आंधी चली और ओलावृष्टि हुई।

एसआईआर : 5 जून से शुरू होगा मतदाता सत्यापन कार्य

- मतदाता सूची को शुद्ध और त्रुटिरहित बनाने के लिए घर-घर पहुंचेंगे बीएलओ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार हरियाणा में विशेष गहन पुनरीक्षण यानि एसआईआर का कार्य 5 जून से आरंभ किया जाएगा। इस विशेष अभियान के माध्यम से मतदाता सूची को अधिक शुद्ध एवं त्रुटिरहित बनाया जाएगा, ताकि प्रत्येक पात्र नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके तथा निर्वाचन प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी एवं निष्पक्ष बनाया जा सके। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी डॉ. विवेक भारती ने बताया कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए शुद्ध मतदाता सूची का होना अत्यंत आवश्यक है। विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान का उद्देश्य मृत मतदाताओं के नाम हटाना, दोहरी प्रविष्टियों को समाप्त करना, स्थानांतरित मतदाताओं के विवरण को स्पष्ट करना तथा नए पात्र नागरिकों के नाम मतदाता सूची में शामिल करना है। उन्होंने बताया कि इस पुनरीक्षण के लिए 1 जुलाई 2026 को अर्हता तिथि निर्धारित किया गया है।

डीसी डॉ. विवेक भारती।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 5 से 10 जून तक बूथ लेवल अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा तथा उन्हें आवश्यक सामग्री वितरित की जाएगी। इसके उपरांत 15 जून से 14 जुलाई तक बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन करेंगे और आवश्यक विवरण एकत्रित करेंगे। इसी अवधि में मतदान केंद्रों के रेशनलाइजेशन का कार्य भी पूरा किया जाएगा, ताकि मतदाताओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा सकें। एसआईआर के दौरान तैयार की गई ड्राफ्ट मतदाता सूची का प्रकाशन 21 जुलाई को किया जाएगा। इसके बाद 21 जुलाई से 20 अगस्त तक दावे एवं आपत्तियां प्राप्त की जाएंगी, ताकि किसी भी प्रकार की त्रुटि का समय रहते निवारण किया जा सके।

बीएलओ की अहम भूमिका

डॉ. विवेक भारती ने कहा कि बीएलओ तथा बूथ लेवल एजेंट इस पूरी प्रक्रिया की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी सक्रिय भागीदारी से मतदाता सूची को अधिक सटीक एवं विश्वसनीय बनाया जा सकता है। उन्होंने सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों, बीएलए तथा आम नागरिकों से अभियान में सहयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि मतदाताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए गणना प्रपत्र भरने और दस्तावेज जमा करने की प्रक्रिया को हाइब्रिड मोड में उपलब्ध कराया गया है। अब कोई भी नागरिक घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से भी अपना गणना प्रपत्र भर सकता है। इसके लिए निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर जाकर अथवा उपलब्ध क्यूआर कोड को स्कैन कर आवश्यक जानकारी दर्ज की जा सकती है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि जब बीएलओ सत्यापन के लिए उनके घर पहुंचें तो उन्हें आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराएं।

लंबित भत्तों के लिए रोडवेज कर्मियों ने सिरसा डिपो पर किया धरना-प्रदर्शन

- रात्रि भत्ता, मेडिकल बिल व शिक्षा भत्ते की उठाई मांगें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

सांझा मोर्चा हरियाणा रोडवेज के आह्वान पर सिरसा डिपो में कर्मचारियों की मांगों रात्रि भत्ता, अतिरिक्त ड्यूटी भत्ता, मेडिकल बिल, शिक्षा भत्ता आदि देय भत्ते समय पर न देने के विरोध मी जम कर प्रदर्शन किया और डिपो प्रशासन के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की। इस अवसर पर रोडवेज कर्मचारी यूनियन से प्रधान, रिछपाल सिंह संधू, उप प्रधान आत्मा राम बेनीवाल, राज्य कमेटी सदस्य लादू राम लूना, शिवराज बराड़, सुरेंद्र रानियां, सचिव सुरेंद्र बैरागी और संयुक्त कर्मचारी संघ से महासचिव चमन स्वामी, वरिष्ठ उपप्रधान कुलदीप पावड़ा, प्रधान सतवीर कड़वासरा, सचिव प्रवीन, सतपाल जयप्रकाश, स्वतंत्र यूनियन से भारत भूषण, सचिव जितेंद्र किरार, भारतीय मजदूर संघ से वरिष्ठ उप प्रधान विकास, प्रधान सुरेंद्र निरानिया और एसकेएस से सचिव सतपाल, रोहताश आदि मौजूद रहे।

सिरसा। मांगों को लेकर प्रदर्शन करते हुए रोडवेज कर्मचारी।

प्रत्येक संकट में संकटमोचक बनी अरोड़ा बिरादरी: सुनीता

सिरसा। श्री अरोड़वंश समाज के युग प्रवर्तक अरूट महाराज का जन्मदिवस अरोड़ा समाज की तरफ से एवीआई पब्लिक स्कूल में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत अरूट की प्रतिमा पर माल्यार्पण से की गई। एवीआई पब्लिक स्कूल की चेयरमैन सुनीता सेतिया ने कहा कि अरुट महाराज भगवान श्रीराम के वंशज थे और उन्होंने भगवान परशुराम से शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने कहा कि जब-जब भी देश या धर्म पर कोई संकट आया तो अरोड़ा बिरादरी ने अरूट महाराज के सिद्धांतों पर चलते हुए कुर्बानियां देकर देश और धर्म की रक्षा की। अरोड़ा बिरादरी की ओर से जहां देश हित के लिए कार्य किए जा रहे हैं, वहीं शहर में अरोड़ा बिरादरी से संबंधित परिवारों को साथ लेकर सामाजिक कार्य भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अरोड़ा बिरादरी द्वारा परिवार मिलन समारोह कराना, मेडिकल कैंप लगाना, रक्तदान कैंप लगाना, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे लगाना, दिव्यांग महिलाओं को व्हीलचेयर देना सहित अनेक सामाजिक कार्य किए जा रहे हैं।

डॉ. अर्चना की प्रदेशाध्यक्ष पर नियुक्ति से संगठन को मिलेगी ऊर्जा : सुभाष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व द्वारा डॉ. अर्चना गुप्ता को हरियाणा भाजपा का नया प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने से जिला भाजपा कार्यकर्ताओं और वरिष्ठ नेताओं में भारी उत्साह देखा जा रहा है। फतेहाबाद के वरिष्ठ भाजपा नेता सुभाष खिलेरी ने इस संगठनात्मक बदलाव का स्वागत करते हुए केंद्रीय व प्रांतीय नेतृत्व के इस फैसले को पार्टी हित में एक बड़ा कदम बताया और कहा कि डॉ. अर्चना गुप्ता की नियुक्ति से पूरे प्रदेश के भाजपा कार्यकर्ताओं में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ है। इस अवसर पर सुभाष खिलेरी के साथ अन्य स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने भी डॉ. गुप्ता की नियुक्ति का स्वागत करते हुए एक-दूसरे को बधाई दी और खुशी का इजहार किया। भाजपा नेता सुभाष खिलेरी ने कहा कि डॉ. अर्चना गुप्ता की सांगठनिक क्षमता और जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं के बीच उनकी मजबूत पकड़ का लाभ पूरे प्रदेश में संगठन को मिलेगा। उन्होंने कहा कि शीर्ष नेतृत्व ने एक कर्मठ और समर्पित महिला नेत्री को कमान सौंपकर कार्यकर्ताओं के मान-सम्मान को बढ़ाया है। इस नियुक्ति से न केवल कार्यकर्ताओं में एक नई ऊर्जा का संचार होगा, बल्कि आने वाले समय में पार्टी सांगठनिक स्तर पर नए कीर्तिमान स्थापित करेगी।

- जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं को मिलेगा सहयोग और लाभ

सुभाष खिलेरी।

विदेश जाने के इच्छुक युवा मान्यता प्राप्त एजेंट से ही करें संपर्क: पुलिस अधीक्षक

डबवाली। पुलिस अधीक्षक जसलीन कौर ने विदेश में रोजगार, शिक्षा अथवा बेहतर भविष्य की तलाश में जाने की योजना बना रहे युवाओं और उनके परिजनों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए सतर्क रहने की अपील की है। उन्होंने कहा कि हाल के समय में कई ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें युवाओं को विदेश में आकर्षक वेतन का सपना दिखाकर ठगी का शिकार बनाया गया। कई युवा अवैध एजेंटों के झांसे में आकर न केवल अपनी मेहनत की कमाई गंवा बैठे, बल्कि विदेश पहुंचने के बाद उन्हें जबरन मजदूरी, दस्तावेज जब्त किए जाने, मानव तस्करी जैसी परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ा। एसपी ने कहा कि विदेश जाने का निर्णय जीवन का एक महत्वपूर्ण कदम है, इसलिए किसी भी एजेंट, संस्था पर मिलने वाले नौकरी के प्रस्ताव पर आंख मूंदकर विश्वास न करें।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 8291554800, 7988727916

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़े नीति निर्माण प्रक्रिया में निभाते हैं महत्वपूर्ण भूमिका

फतेहाबाद में एनएसओ करेगा सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण

उद्यमों के स्वामित्व, कर्मचारियों की संख्या, पंजीकरण स्थिति को किया जाएगा शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा फतेहाबाद जिला के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न महत्वपूर्ण घरेलू सर्वेक्षण किए जाएंगे। इन सर्वेक्षणों को लेकर डीसी डॉ. विवेक भारती की अध्यक्षता में संबंधित विभागीय अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई, जिसमें सर्वेक्षणों की प्रक्रिया एवं उद्देश्य पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में सहायक निदेशक मनीषा यादव ने सर्वेक्षणों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय वर्ष 1950 से देशभर में सामाजिक एवं आर्थिक विषयों पर बड़े स्तर पर घरेलू सर्वेक्षण कर रहा है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त आंकड़े सरकार की साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण प्रक्रिया में भूमिका निभाते हैं। असंगठित क्षेत्र के उद्यमों पर वार्षिक सर्वेक्षण के अंतर्गत विनिर्माण, व्यापार तथा अन्य सेवा क्षेत्रों में कार्यरत गैर-कृषि एवं गैर-पंजीकृत प्रतिष्ठानों से जानकारी एकत्रित की जाएगी। इसमें उद्यमों के स्वामित्व, कर्मचारियों की संख्या, पंजीकरण स्थिति, वित्तीय स्रोत, ऋण उपयोग तथा श्रमिकों की भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया जाएगा। संग्रहित आंकड़े रोजगार सृजन, आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय लेखा तैयार करने में सहायक होंगे।

फतेहाबाद। सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण को लेकर बैठक लेते डीसी।

आय और जीवन स्तर की होगी समीक्षा

राष्ट्रीय घरेलू आय सर्वेक्षण के माध्यम से लोगों के जीवन स्तर एवं आय-व्यय के पैटर्न का अध्ययन किया जाएगा। इस सर्वेक्षण में परिवार के आकार, शिक्षा, रोजगार, मजदूरी, वेतन, स्वरोजगार, कृषि आय, किराया, ब्याज, पेंशन तथा अन्य आय स्रोतों से संबंधित जानकारी ली जाएगी। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि इस सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी का उपयोग किसी प्रकार के टैक्स निर्धारण के लिए नहीं किया जाएगा।

रोजगार और बेरोजगारी से जुड़े आंकड़े होंगे

जुलाई 2017 से संचालित आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण देश में रोजगार एवं बेरोजगारी से संबंधित प्रमुख आंकड़ों का महत्वपूर्ण स्रोत है। इस सर्वेक्षण के माध्यम से बेरोजगारी दर, श्रम बल भागीदारी दर तथा श्रमिक जनसंख्या अनुपात जैसे श्रम बाजार संकेतकों का आकलन किया जाता है। मंत्रालय द्वारा इसकी रिपोर्ट त्रैमासिक रूप से प्रकाशित की जाती है। बैठक में बताया गया कि एनएसओ की सर्वेक्षण टीमें जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के घरों में जाकर आवश्यक जानकारी एकत्र करेंगी।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 31 मई 2026

विशेषः विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून

यह चिंताजनक बात है कि प्रकृति की निकटता का महत्व समझते हुए भी आज के समय में अधिकांश लोग उससे दूर होकर दिन के कई घंटे विभिन्न डिजिटल स्क्रीन के साथ बिताते हैं। इससे कई समस्याएं पैदा होती हैं। इनसे बचने के लिए हमें प्रकृति के सान्निध्य में रहना चाहिए। साथ ही उसे स्वच्छ और सुरक्षित बनाए रखने का संकल्प भी हमें लेना चाहिए।

प्रकृति से जुड़ाव सुधारेगा स्वास्थ्य
बेहतर होगा पर्यावरण

{ कवर स्टोरी / स्नेहा सिंह }

आज हम सब तकनीक के उन्नत दौर में जी रहे हैं। स्मार्टफोन, लैपटाप, टैबलेट और टेलीविजन जैसे उपकरणों ने हमारे जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, लेकिन इसी सुविधा ने हमें धीरे-धीरे प्रकृति से दूर भी कर दिया है। सुबह आंख खुलते ही हाथ मोबाइल तक पहुंचता है और रात में नींद आने तक स्क्रीन हमारी आंखों के सामने रहती है। ऐसा लगता है मानो आधुनिक जीवन का हर पल किसी न किसी डिजिटल उपकरण से जुड़ गया हो।

तकनीक का नकारात्मक प्रभावः तकनीक ने संचार, शिक्षा, व्यापार और मनोरंजन के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन कर दिया है, लेकिन इसका दूसरा पक्ष भी उतना ही गंभीर है। लगातार स्क्रीन के सामने रहने की आदत ने हमारे शरीर और मन दोनों पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। यही कारण है कि आज पूरी दुनिया में डिजिटल डिटॉक्स की अवधारणा तेजी से बढ़ रही है। इसका सीधा अर्थ है, कुछ समय के लिए डिजिटल उपकरणों से दूरी बनाकर प्रकृति के करीब जाना जरूरी है।

बहुत कारगर है नेचर हीलरः आज विज्ञान भी यह स्वीकार कर चुका है कि प्रकृति केवल सौंदर्य निहारने का माध्यम नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली चिकित्सक की तरह भी होती है। पेड़, हरियाली, खुला आकाश, मिट्टी और ताजी हवा हमारे शरीर और मानसिक स्वास्थ्य के लिए किसी औषधि से कम नहीं होते हैं। जब कोई व्यक्ति प्रकृति के बीच समय बिताता है, तब उसके शरीर में कई सकारात्मक जैव-रासायनिक परिवर्तन शुरू हो जाते हैं। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि बगीचे में घास पर नंगे पैर चलना अत्यंत लाभदायक है। इस प्रक्रिया को अर्थिंग या ग्राउंडिंग कहा जाता है। आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्य का पृथ्वी से सीधा संपर्क लगभग समाप्त कर दिया है। डामर की सड़कें, सीमेंट के फर्श और रबर के जूते हमें प्रकृति से अलग कर चुके हैं। जबकि हमारे पैरों के तलवों में शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़े तंत्रिका बिंदु होते हैं। घास और मिट्टी पर चलने से इन बिंदुओं पर प्राकृतिक दबाव पड़ता है, जिससे रक्त संचार बेहतर होता है और शरीर में ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है।

प्रकृति केवल मानसिक शांति ही नहीं देती, बल्कि शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को भी मजबूत बनाती है। पेड़-पौधे वातावरण में फाइटोनसाइड्स नामक जैविक रसायन छोड़ते हैं। ये तत्व मनुष्य के शरीर में जाकर श्वेत रक्त कोशिकाओं की सक्रियता बढ़ाते हैं, जिससे रोगों से लड़ने की क्षमता मजबूत होती है। नीम, पीपल, बरगद और अन्य विशाल वृक्ष केवल छाया देने का काम नहीं करते, बल्कि वे वातावरण को शुद्ध बनाकर हमारे स्वास्थ्य की रक्षा भी करते हैं। यही कारण है कि गांवों और हरियाली वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का मानसिक संतुलन और शारीरिक स्वास्थ्य अकसर बेहतर पाया जाता है।

स्क्रीन की लत से बिगड़ता स्वास्थ्यः अगर आप वर्किंग हैं तो ऑफिस का ज्यादातर काम कंप्यूटर पर होता है, खाली समय मोबाइल पर स्क्रॉल करते बीतता है और मनोरंजन टेलीविजन या ओटीटी प्लेटफॉर्म के जरिए होता है। परिणामस्वरूप शरीर लगातार कृत्रिम रोशनी के संपर्क में रहता है। मोबाइल और कंप्यूटर स्क्रीन से निकलने वाली ब्लू लाइट आंखों पर सबसे अधिक दुष्प्रभाव डालती है। इससे आंखों में जलन, सूखापन और धुंधलापन बढ़ने लगता है। लंबे समय तक स्क्रीन देखने से सिरदर्द, गर्दन और कंधों में दर्द तथा मांसपेशियों में जकड़न जैसी समस्याएं होने लगती हैं। बच्चे हों या बड़े, लगभग हर आयु वर्ग इसके दुष्प्रभावों का सामना कर रहा है।

सबसे गंभीर प्रभाव हमारी नींद पर पड़ता है। रात में देर तक मोबाइल देखने से शरीर में मेलाटोनिन हार्मोन का उत्पादन बाधित होता है, जो नींद को नियंत्रित करता है। परिणामस्वरूप अनिद्रा, बेचैनी और मानसिक थकान बढ़ने लगती है। धीरे-धीरे यह स्थिति तनाव, अवसाद और चिड़चिड़ेपन का कारण बन जाती है।

आंखों-मस्तिष्क को मिले आरामः लगातार स्क्रीन देखने से आंखों की मांसपेशियां थक जाती हैं। हमारा ध्यान केवल

नजदीकी वस्तुओं पर केंद्रित रहता है, जिससे आंखों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। इसके विपरीत जब व्यक्ति हरियाली और दूर तक फैले प्राकृतिक दृश्यों को देखता है, तो आंखों को आराम मिलता है।

हरा रंग आंखों के लिए सबसे आरामदायक माना जाता है। प्रकृति की हरियाली आंखों की थकान कम करती है और मानसिक तनाव को भी घटाती है। यही कारण है कि पार्क में कुछ समय बिताने के बाद व्यक्ति स्वयं को अधिक शांत और ताजगी से भरा महसूस करता है।

पौधों के संग बिताएं समयः आज के दौर में लोग अधिकांश समय डिजिटल दुनिया से जुड़े रहते हैं। आधुनिक जीवन की भाग-दौड़ में यदि हम प्रतिदिन कुछ समय प्रकृति के साथ बिताएं तो अपने शरीर और मस्तिष्क को पुनः ऊर्जावान बना सकते हैं। इसके लिए हम रोज कुछ समय अपने गार्डन में या बालकनी के गमलों में लगे पौधों की देखभाल कर सकते हैं। सुबह-शाम उनको पानी दे सकते हैं। उनकी मिट्टी की गुड़ाई कर सकते हैं, उसकी सफाई कर सकते हैं। इससे आपको पेड़-पौधों के करीब रहने का अवसर मिलेगा। यही नहीं आप रोज सुबह-शाम अपने आस-पास के किसी पार्क में वॉक करने जा सकते हैं। कुछ देर वहां की ताजी हवा में सांस ले सकते हैं। पेड़ों के झुरमुट में पक्षियों के कलरव को सुन सकते हैं। यकीन मानिए, पूरे दिन में से प्रकृति के करीब बिताए गए कुछ मिनट आपको न केवल ताजगी से भर देंगे, आपको प्रकृति की महत्ता का अहसास भी कराएंगे। जाहिर है, इससे आप प्रकृति के प्रति, अपने आस-पास के वातावरण के प्रति संवेदनशील बनेंगे। आप उसको स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए भी प्रेरित होंगे। *

विशेषः विश्व साइकिल दिवस 3 जून

साइकिलिंग का डबल फायदा
स्वस्थ शरीर-शुद्ध वातावरण

भले ही आज की फास्ट लाइफ में साइकिल चलाना कम ही लोग पसंद करते हैं। लेकिन इसे चलाने से न केवल स्वास्थ्य संबंधी अनेक फायदे मिलते हैं, पर्यावरण को शुद्ध रखने में भी यह मददगार है। इससे होने वाले तमाम फायदों पर एक नजर।

{ अवेयरनेस / नम्रता नदीम }

आज के दौर में खान-पान में होने वाले बदलाव, निष्क्रिय जीवनशैली और जीवन में बढ़ते तनाव के कारण कम उम्र में ही लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। इसीलिए डॉक्टर्स स्वस्थ रहने के लिए फिजिकल एक्टिविटी को बेहद जरूरी मानते हैं। इन एक्टिविटीज में साइकिलिंग को बहुत कारगर माना जाता है, जिसे करके हम न केवल वजन घटा सकते हैं, कई बीमारियों के जोखिम को कम कर सकते हैं, साथ ही अपने आस-पास के वातावरण को भी प्रदूषणमुक्त रखने में अपना योगदान दे सकते हैं।

वातावरण को लाभः साइकिल में पेट्रोल, डीजल या किसी अन्य प्रकार का ईंधन इस्तेमाल नहीं होता है। इसलिए इससे वायु प्रदूषण बिल्कुल नहीं होता है। इसमें बिजली का भी यूज नहीं होता, इस तरह एनर्जी की बचत होती है। इसमें तेज आवाज वाले हॉर्न नहीं होते हैं, इससे ध्वनि प्रदूषण भी नहीं होता है। इसका आकार छोटा होता है, इससे ट्रैफिक जाम की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

उपयुक्त समय-स्थानः साइकिल चलाने के लिए सुबह का समय सबसे उपयुक्त होता है, क्योंकि खाली पेट साइकिल चलाने से बॉडी फैट जल्दी बर्न होता है। शुरुआती दौर में सीधी सपाट रोड पर साइकिलिंग और बाद में ज्यादा कैलोरीज बर्न करने के लिए, वजन घटाने के लिए चढ़ाई पर भी साइकिलिंग की जा सकती है। जिस समय साइकिल चला रहे हों, अपने पोस्चर पर फोकस करें। साइकिल चलाते समय एक ही पोस्चर में न रहकर उसमें बदलाव करते रहें ताकि शरीर के दूसरे हिस्सों पर भी जोर पड़े।

पैडलिंगः साइकिलिंग के रुटीन को शुरू करने से पहले कहां से पैडलिंग करनी है और कहां आराम से राइड करना है, यह ध्यान रखना जरूरी है। पैरों की मदद से जब पैडलिंग की जाती है तो पैर ऊपर से नीचे की तरफ एक्टिविटी करते हैं। इससे पैरों की मसल्स से लेकर शरीर के निचले हिस्से और ऊपर के हिस्से की मसल्स मजबूत होती हैं और शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

होने वाले स्वास्थ्य लाभः साइकिलिंग दिल के स्वास्थ्य के लिए बहुत बेहतर एक्सरसाइज है। इससे ब्लड सर्कुलेशन से जुड़े जोखिम को कम कर सकते हैं। जो लोग ऑफिस या किसी दूसरे स्थान पर दिन भर बैठकर काम करते हैं, उनके लिए साइकिलिंग इसलिए भी बेहतरीन एक्सरसाइज है, क्योंकि इससे डायबिटीज का खतरा कम होता है। साइकिल चलाने से इंसुलिन लेवल कम होता है। प्रतिदिन एक घंटे अगर साइकिलिंग की जाए तो 500 कैलोरी बर्न होती है और इससे वजन भी जल्दी कम होता है। विभिन्न शोध इस बात की ओर इशारा करते हैं कि पुरुषों ही नहीं महिलाओं के लिए भी साइकिलिंग एक फायदेमंद एक्सरसाइज है। यह उनमें ब्रेस्ट कैंसर के जोखिम को कम करती है। जोड़ों से जुड़ी समस्याओं की रोकथाम करने के लिए भी साइकिलिंग काफी फायदेमंद होती है। अर्थराइटिस में भी यह एक अच्छी एक्सरसाइज है। इससे मसल्स मजबूत होती हैं और एनर्जी लेवल भी बढ़ता है। साइकिलिंग से हमें डिप्रेशन और टेंशन कम होता है।

बुजुर्गों के लिए फायदेमंदः जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, हमारी हड्डियां और मांसपेशियां कमजोर हो जाती हैं, जिसके कारण व्यायाम करना मुश्किल होता है। लेकिन उम्र बढ़ने के बावजूद साइकिल चलाना एक ऐसा व्यायाम है, जो आसानी से हो सकता है और जिसके कई फायदे हैं। विभिन्न अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि साइकिल चलाने से उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी होती है। साइकिल चलाने से ओल्ड एज में भी निरोगता बढ़ती है। नियमित रूप से साइकिल चलाने वालों में कैंसर, हृदय रोग और समय पूर्व मृत्यु की आशंका कम होती है। साइकिलिंग से पहले अतिरिक्त कार्बोहाइड्रेट डाइट लें। इस दौरान आप स्नैक्स भी ले सकते हैं। साइकिलिंग करते समय हाइड्रेट रहें। जो लोग सामाजिक रूप से दूसरों से अलग रह रहे हैं, इस उम्र में उनमें अवसाद की आशंका रहती है। इसलिए फ्रेंड्स के साथ साइकिलिंग करने से न केवल आत्मविश्वास बढ़ता है बल्कि आप खुशमिजाज जीवन जी सकते हैं। *

{ प्रिकॉशन / लोकमित्र गौतम }

विशेषः तंबाकू निषेध दिवस 31 मई

इसलिए नहीं छूटती तंबाकू की लत

किसी भी रूप में तंबाकू का सेवन बेहद खतरनाक होता है। ऐसे में केवल एक दिन ही नहीं हर रोज अनेक स्तरों पर प्रयास करने, लोगों को जागरूक किए जाने की जरूरत है।

हर साल 31 मई को दुनिया भर में 'वर्ल्ड नो टोबेको-डे' यानी विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। लेकिन हैरानी की बात ये है कि यह दिवस जोर-शोर से मनाए जाने के बावजूद आखिरकार दुनिया तंबाकू की जानलेवा गिरफ्त से बाहर क्यों नहीं आ पा रही है?

चिंता बढ़ाते आंकड़ेः दुनिया भर में तंबाकू का सेवन लगातार बढ़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक हर साल दुनिया में 70 लाख से ज्यादा लोग सीधे तंबाकू सेवन के कारण मौत का शिकार हो रहे हैं, जबकि 12 से 13 लाख लोग परोक्ष धूम्रपान यानी धूम्रपान करने वाले लोगों के साथ रहने के कारण अपनी जान गंवा रहे हैं।

कई बीमारियों की वजहः कुछ लोगों को लगता है कि तंबाकू केवल फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है, लेकिन सच्चाई यही नहीं है। सच यह है कि तंबाकू सबसे ज्यादा तरह के कैंसर होने का कारण है। तंबाकू के सेवन से फेफड़ों का कैंसर होता है, मुंह का कैंसर, गले और जीभ का कैंसर, स्वर यंत्र का कैंसर, अन्न नली, पेट और अग्नयाशय का कैंसर, ये सभी तरह के कैंसर विशेषकर भारत में गुटखा, खैनी और जर्दा खाने के कारण हो रहे हैं। इसके अलावा भी तंबाकू के सेवन से हार्ट अटैक, स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप और हृदय की धमनियों का संकुचन जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। तंबाकू के लगातार सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत कमजोर हो जाती है और टाइप-2 डायबिटीज का खतरा भी बढ़ जाता है। घाव मुश्किल से भरते हैं। अगर गर्भवती महिलाएं तंबाकू का सेवन करती हैं, तो समय से पहले प्रसव की समस्या पैदा हो जाती है, पैदा होने वाले बच्चे का वजन बहुत कम रह जाता है, गर्भपात का खतरा 30 फीसदी ज्यादा बढ़ जाता है और नवजात की मृत्यु का जोखिम सामान्य से कई गुना ज्यादा हो जाता है। इस तरह देखें तो तंबाकू के सेवन से एक नहीं अनेक तरह के स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं।

युवाओं में बढ़ा ट्रेंडः दुनिया में तंबाकू का कारोबार लगातार बढ़ रहा है। अगर विशेष तौर पर युवाओं की बात करें तो वे फिटनेस एप डाउनलोड कर रहे हैं, जिम जा रहे हैं, ऑर्गेनिक भोजन पर जोर दे रहे हैं, लेकिन सिगरेट, गुटखा और विभिन्न निकोटिन उत्पादनों की लत से निकल नहीं पा रहे। पहले जहां बीड़ी और सिगरेट ही युवाओं को गिरफ्त में लेने के दो बड़े तंबाकू उत्पाद थे, वहीं अब फ्लेवर्ड वेप, ई-सिगरेट, निकोटिन पाउच और न जाने कितने आकर्षक पैकेजिंग वाले तंबाकू उत्पाद बाजार में आ गए हैं, जिनके मोहजाल से युवा तो छोड़िए, किशोर भी नहीं छूट पा रहे। कंपनियां इन्हें कूल, स्टाइलिश और तनाव दूर करने वाला बताकर पेश करती हैं। सोशल मीडिया पर फिल्मों, वेब सीरीज और इंफ्लूएंसर संस्कृति ने भी धूम्रपान को एक नई तरह के ग्लैमर से जोड़ दिया है। इसलिए यंगस्टर्स इसकी गिरफ्त में बढ़ते जा रहे हैं।

कारगर नीति की है कमीः भारत की स्थिति तो विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि भारत दुनिया के सबसे बड़े तंबाकू उपभोक्ता देशों में शामिल है। यहां धूम्रपान के अलावा चबाने वाले तंबाकू का भी एक भारी-भरकम बाजार है। गुटखा, खैनी, जर्दा, पान मसाला और सुगंधित निकोटिन उत्पाद, गांवों से लेकर महानगरों तक युवाओं की कमजोरी बनकर रह गए हैं। सरकार एक तरफ तो तंबाकू के सेवन पर बहुत चिंतित होती है, दूसरी तरफ हर तरह के तंबाकू उत्पाद गांवों से लेकर शहरों तक हर जगह इतनी आसानी और इफरात में उपलब्ध हैं कि जरा-सा इनकी तरफ कोई फिसला नहीं कि हमेशा के लिए इसके चक्रव्यूह में फंसकर रह जाता है।

हद तो यह है कि जैसे-जैसे विकास के नाम पर, आधुनिकीकरण के नाम पर, तेज रफ्तार लाइफस्टाइल के नाम पर, लोग स्मार्ट हो रहे हैं, वैसे-वैसे तंबाकू उत्पादन के सेवन को सामान्य आदत मानते जा रहे हैं। इसीलिए हर साल 'नो टोबेको-डे' की रस्म अदायगी के बावजूद तंबाकू का सेवन पूरी दुनिया में दिन दूनी, रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ रहा है। इसलिए विशेषज्ञ मानते हैं कि केवल प्रतिबंध से बात नहीं बनने वाली बल्कि धूम्रपान के विरुद्ध एक जन सांस्कृतिक अभियान की जरूरत है, तब कुछ असर होगा। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

विडंबनाओं पर कटाक्ष

वरिष्ठ साहित्यकार ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्यों का नया संग्रह 'बाराखड़ी' हाल में छपकर आया है। इसमें कुल 61 व्यंग्य संकलित हैं। पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा है कि पिछली सदी की तुलना में इस सदी के तेजी से बदलते दौर में व्यंग्य लेखन की शैली का बदलना भी जरूरी है। इस संग्रह के व्यंग्यों से गुजरते हुए, उनकी यह बात सही साबित होती है। विभिन्न प्रकार के संक्रमणों से ग्रस्त समाज की विडंबनाओं के नए-नए चेहरों को लेखक ने नए अंदाज में व्यंग्यों में अनावृत्त किया है। 'घोटालातुर' व्यंग्य में वे आम लोगों की मानसिकता पर सटीक कटाक्ष करते हुए कहते हैं, 'सभी कर रहे हैं, सब तरफ हो रहा है तो समय रहते मैं भी कर डालूं, यह सोचा है।' राजनीति किस तरह भोले-भाले इंसान के भरोसे के साथ खिलवाड़ करती है, और फिर वह हतप्रभ होकर अपना मार्ग बदल लेता है, इसे 'नारा रिपेयरिंग सेंटर' में पढ़ा जा सकता है। 'वह सालों तक खुशफहमी पाले रहा कि नारों पर अमल करके एक दिन यह देश बदल जाएगा, यहां क्रांति होगी।' पुस्तक के लगभग सभी व्यंग्य हमें झिंझोड़कर हमारी वह तस्वीर दिखाते हैं, जिन्हें देखने से हम बचना चाहते हैं। *

पुस्तकः बाराखड़ी (व्यंग्य-संग्रह), **लेखकः** ज्ञान चतुर्वेदी, **मूल्यः** 395 रुपए, **प्रकाशकः** राजपाल एंड संस, दिल्ली

{ कहानी / रश्मि वैभव गर्ग }

मन का पर्यावरण

सोमेश जी को जब मालूम हुआ कि घर के नवीनीकरण के लिए उनका पुराना साथी नीम का पेड़ कटने वाला है तो वे बहुत बेचैन हो गए। अपनी मनोदशा उन्होंने अपने पौत्र से साझा की। फिर जो हुआ, वे सुखद एहसास से भर गए।

सोमेश जी का मन आज कुछ व्याकुल-सा था। आज सुबह, उनका पुत्र राहुल और उनकी पुत्रवधु, घर के नवीनीकरण का प्रस्ताव लेकर उनके पास आए थे। दोनों ही पति-पत्नी नवीनीकरण को लेकर काफी उत्साहित थे, तकरीबन सब कुछ तय करके ही आए थे। बस सोमेश जी की सहमति की मुहर लगवाना चाहते थे।

अपने बेटे-बहू का उत्साह देखकर सोमेश जी भी खुश थे, लेकिन एक बात जो उनके मन को कचोट रही थी, वह यह थी कि उनके कमरे के बाहर बगीचे में एक पुराना नीम का पेड़ था, उसके कटवाए जाने की बात की जा रही थी।

सोमेश जी के जीवन पर्यंत का साथी, नीम का पेड़, जिसकी टहनियां अकसर उनके कमरे की खिड़की से अंदर आ जाती थीं, जिससे उन्हें लगता था मानो वो उनसे गलबहियां करना चाहती हों। पत्नी सुधा के निधन के बाद, वो नीम ही उनके अकेलेपन का साथी था, जो उनके जीवन के हर सुख और दुःख का साक्षी था। कभी-कभी जीवन में ऐसे सान्निध्य मिल जाते हैं, जो न केवल हमारे दिल के करीब होते हैं, वरन् उनसे भावनात्मक जुड़ाव, खून के रिश्तों से भी गहन हो जाता है।

सोमेश जी कभी बच्चों की खुशी से खिला चेहरा देखते, जिसमें घर के नवीनीकरण की तस्वीर सज रही थी, तो कभी अपना नीम के साथ बिताया एकाकीपन। अपने पिता की स्मृति को वो यूं भी खोना नहीं चाहते थे। बचपन से उस नीम की छांव तले ही तो बड़े हुए थे वे।

सोमेश जी चाहते थे कि घर के नवीनीकरण में उनका पुरातन साथी नीम का पेड़ भी बना रहे, जिससे वो अपना सुख-दुःख बांट सकें।

सोमेश जी अपनी दुविधा अपने बेटे-बहू से कह नहीं पा रहे थे। शायद दुविधायुक्त मन अपने करीबी लोगों को ढूंढ़ ही लेता है, इसलिए, सोमेश जी को अपने पौत्र पलाश की याद आई। पलाश इसी वर्ष इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए दूसरे शहर में चला गया था। सोमेश जी ने पलाश को अपनी भावनाएं व्यक्त करने का सही साथी माना, लेकिन अपनी बात उन्हें फोन पर कहना उचित नहीं लगा। उन्होंने पलाश को एक पत्र लिखा।

प्रिय बेटा पलाश,

स्नेहाशीष

आशा है तुम कुशल होगे। शायद यह तुम्हारे जीवन का पहला खत होगा, आज की डिजिटल दुनिया में खतों का अस्तित्व मिट-सा गया है। लेकिन आज भी मुझे यह ही अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम लग रहा है, जिसमें मैं अपने आप को सहज महसूस कर रहा हूं। मेरे मन में एक कसक है, जिसको मैं तुमसे बांटना चाहता हूं। तुम्हारे माता-पिता घर का नवीनीकरण करवाना चाहते हैं, जिसमें वो नीम के पेड़ को कटवाना चाहते हैं। तुम जानते हो इस नीम से मुझे गहरा लगाव है, उसकी जड़ें मेरे जीवन की जड़ों से जुड़ी हैं। वो मेरे अकेलेपन का साथी है, साथ ही मेरे पिता द्वारा लगाया गया स्नेह भी है, जिसकी छाया में मैं बड़ा हुआ हूं। इस स्नेह को मैं भावी पीढ़ियों को भी हस्तांतरित करना चाहता हूं। मुझे उस पेड़ से भावनात्मक प्रेम है। आशा है तुम मेरे एहसास समझोगे बेटा और कोई उपयुक्त हल निकालोगे। यह पेड़ न केवल मेरी आत्मा से जुड़ा है वरन् हमारे घर के पर्यावरण और सकारात्मकता का प्रतिबिंब भी है।

असीम स्नेह के साथ

तुम्हारा दादा जी

सोमेश जी ने अपने मन के भाव खत में उकेर कर उसकी फोटो लेकर, पलाश को भेज दिया। सोमेश जी, बेसब्री से पलाश की प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे थे। सृष्टि में एकाकी कोई नहीं, आज सोमेश जी को नीम का पेड़ अपने अकेलेपन का साथी लग रहा था, जिसके बचाव के लिए उन्होंने अपने दूसरे साथी पलाश को चुना। जीवन यात्रा में हर पड़ाव पर मन का साथी चाहिए।

कुछ समय पश्चात ही पलाश का व्हाट्सएप पर मैसेज आया, सोमेश जी ने तुरंत अपना फोन खोला और बेसब्री से उसे पढ़ना शुरू किया-

आदरणीय दादा जी

सादर अभिवादन

मैं कितना भाग्यशाली हूं कि जीवन में पहली चिट्ठी मुझे आपकी मिली, जिससे मुझे न केवल पत्रों का वजूद पता चला, बल्कि आपके स्नेहपूर्ण जज्बात भी पता चले। आप घर में सबसे बड़े हैं, आपकी भावनाएं घर के नवीनीकरण से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। नीम का पेड़ न केवल आपके जीवन का साक्षी है, बल्कि मेरे और मेरे पापा के जीवन का भी साक्षी है, तो ऐसे पेड़ को हम कैसे कटवा सकते हैं? साथ ही नीम रात्रि में ऑक्सीजन छोड़ने वाला पेड़ है, जो पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक भी है। मैं तीन दिन बाद घर आ रहा हूं। आकर मां, पापा से पेड़ को नहीं काटने की बात कर लूंगा, उन्हें कहूंगा कि मैं नहीं चाहता कि यह पेड़, जिसकी छांव में मैं बड़ा हुआ हूं, काटा जाए। उन्हें नीम का पर्यावरण में महत्त्व भी बताऊंगा। आप निश्चिंत रहें, और हां दादा जी, हम एक नया पौधा भी लगाएंगे, जिसके छांव तले हमारी भावी पीढ़ियां पल्लवित हों, ताकि उनसे मैं कह सकूं कि यह मेरे दादा जी की अमानत है, जो मेरे घर के पर्यावरण के साथ मेरे जीवन के सभी सुख-दुःख का भी साक्षी रहा है।

आपका सबसे छोटा दोस्त

पलाश

पलाश का ऐसा भावपूर्ण पत्र पढ़कर सोमेश जी की आंखें स्नेह से भर आईं। सोमेश जी सोच रहे थे कि जिस पेड़ की जड़ों में भावों का इतना अकूत खजाना हो, उसकी परवरिश कमतर कैसे हो सकती है। सोमेश जी का सीना गर्व से फूल गया कि पलाश आखिर इसी नीम की छांव में बड़ा जो हुआ है। यह सब सोचकर सोमेश जी मंद-मंद मुस्कुराते हुए सोच रहे थे। पेड़ न केवल पर्यावरण का संतुलन रखते हैं, वरन् मन के आंगन के पर्यावरण का भी भावनात्मक संतुलन बनाए रखते हैं। *

पर्यावरण संरक्षण की मिसाल ये स्वच्छ-सुंदर गांव

वैसे तो अपने देश में लगभग साढ़े छह लाख गांव हैं। लेकिन इनमें से कुछ गांव ऐसे हैं, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में मिसाल कायम की है। अपनी इस उपलब्धि के चलते ये गांव न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुए हैं, पूरी दूनिया में आदर्श ग्राम के रूप में जाने जाते हैं। एक नजर ऐसे ही कुछ बेमिसाल गांवों पर।

अनुकरणीय / शिखर चंद जैन

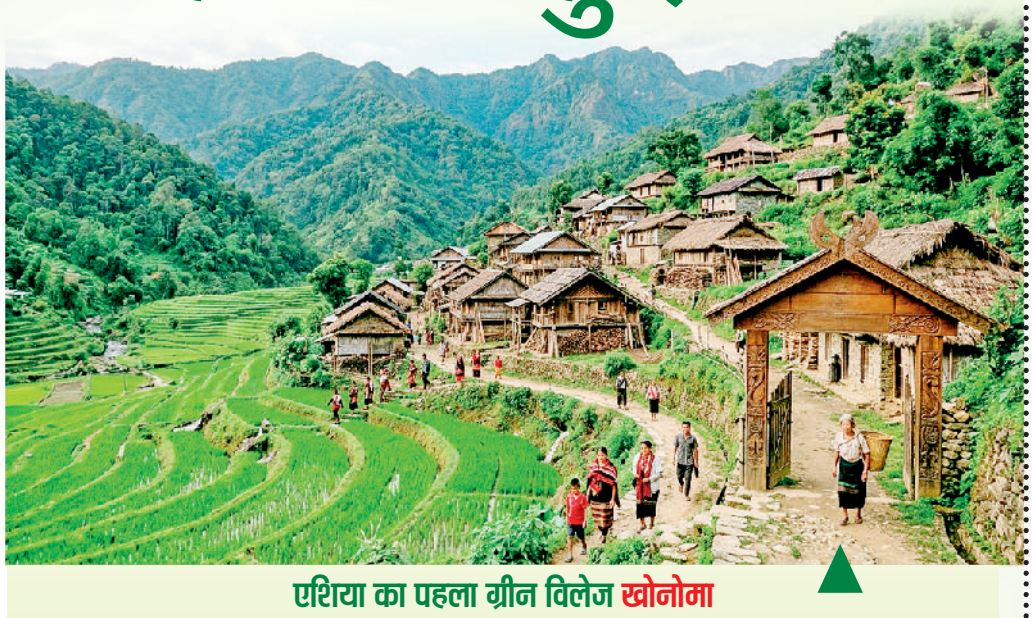

भारत के कई ग्रामीण इलाकों ने पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और प्रकृति आधारित जीवनशैली के मामले में मिसाल कायम की है। ये गांव प्लास्टिक मुक्त जीवन, हरित ऊर्जा, वृक्षारोपण, संसाधनों के संतुलित उपयोग जैसी गतिविधियों के माध्यम से दुनिया को पर्यावरणीय स्वच्छता की राह दिखा रहे हैं। इनके बारे में जानकर आप भी जरूर प्रेरित होंगे।

ईश्वर का बगीचा मावलिननॉन्ग

मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में स्थित मावलिननॉन्ग गांव अपनी अनोखी स्वच्छता के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है और इसे 'एशिया का सबसे स्वच्छ गांव' तथा 'ईश्वर का अपना बगीचा' भी कहा जाता है। यह गांव पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली और विशिष्ट खासी संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र है। 'डिस्कवर इंडिया' पत्रिका द्वारा 2003 में इसे एशिया का और 2005 में भारत का सबसे स्वच्छ गांव घोषित किया गया था। इस गांव में प्लास्टिक के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध है और धूम्रपान भी वर्जित है। यहां के सभी निवासी मिलकर सामुदायिक सफाई करते हैं। सड़कों पर झाड़ू लगाना यहां के ग्रामीणों की दिनचर्या का हिस्सा है। इस गांव की साक्षरता दर लगभग 90 प्रतिशत है। यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि और पर्यावरण-पर्यटन है। पर्यटकों के बीच लोकप्रिय इस गांव में कूड़ा इकट्ठा करने के लिए भी प्लास्टिक की बकेट नहीं बल्कि बांस के कूड़ेदान का उपयोग होता है।

स्वच्छता-समृद्धि की मिसाल हिवरे बाजार

महाराष्ट्र के अहिल्यानगर (अहमदनगर) जिले में स्थित हिवरे बाजार गांव, जल संरक्षण और आत्मनिर्भरता के लिए दुनिया भर में एक आदर्श ग्राम माना जाता है। पद्मश्री पोपटराव पवार के नेतृत्व में इस गांव ने भयंकर सूखे और पलायन की स्थिति से उबरकर कृषि, स्वच्छता और समृद्धि के मामले में एक नई मिसाल कायम की है। यहां वाटरशेड विकास कार्यक्रम के तहत मिट्टी के 50 से अधिक बांध, चेकडैम और पौधारोपण किया गया। इससे भूजल स्तर इतना ऊपर आ गया है कि भयंकर गर्मी में भी पानी की कमी नहीं होती। सुनियोजित खेती, उन्नत पशुपालन और जल प्रबंधन के कारण गांव के परिवार आर्थिक रूप से संपन्न हो गए हैं। गांव में चारों तरफ हरियाली है। गांव में हर घर में शौचालय और सीवर लाइन की सुविधा है और इसे पूरी तरह से मच्छर-मुक्त गांव माना जाता है। कभी सूखे से जूझने वाला यह गांव आज जल संरक्षण और वाटरशेड प्रबंधन का मॉडल है।

पर्यावरण संरक्षण के साथ महिला सशक्तिकरण धरहरा

बिहार के भागलपुर जिले के गोपालपुर प्रखंड में स्थित धरहरा गांव अपनी अनूठी पर्यावरण हितैषी और महिला सशक्तिकरण परंपरा के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इस गांव की खास बात यह है कि यहां जब भी किसी घर में बेटी जन्म लेती है, तो परिवार के लोग घर के आंगन या अपने खेतों में कम से कम 10 फलदार पौधे लगाते हैं। जब बेटियां बड़ी होती हैं, तो इन पेड़ों से होने वाली आय उनकी शिक्षा, शादी या अन्य आर्थिक जरूरतों के लिए एक मजबूत सहारा बनती हैं। इस पुरानी परंपरा के कारण 20,000 से अधिक फलों के पेड़ों की हरियाली के बीच बसा यह गांव पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण का भी एक आदर्श उदाहरण बन गया है। *

एशिया का पहला ग्रीन विलेज खोनोमा

नागालैंड की राजधानी कोहिमा से लगभग 20 किमी. दूर स्थित खोनोमा गांव भारत ही नहीं, पूरे एशिया का पहला ग्रीन विलेज है। यह गांव जैव विविधता संरक्षण, वन्यजीव संरक्षण और जैविक खेती के लिए जाना जाता है। अंगामी जनजाति द्वारा बसा यह गांव अपने अदम्य साहस, अनूठी संस्कृति और प्रकृति-संरक्षण के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। खोनोमा के निवासियों ने स्वैच्छिक रूप से शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है और जंगलों, लुप्तप्राय जीवों का संरक्षण शुरू किया है। इसके परिणामस्वरूप 2005 में इसे एशिया का पहला हरित गांव घोषित किया गया। यह स्थान पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन का बेहतरीन केंद्र है। यहां के घर पूरी तरह से लकड़ी, बांस और पत्थरों से बने हुए हैं। गांव में सीढ़ीनुमा धान की खेती की जाती है। यहां का प्राकृतिक नजारा बेहद मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। यह गांव तंबाकू और शराब मुक्त क्षेत्र भी है। यहां के निवासियों ने शिकार और वनों की कटाई पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाकर एक वन्यजीव अभयारण्य भी विकसित किया है।

ईको-फेमिनिज्म का प्रतीक पिपलांत्री

राजस्थान के राजसमंद जिले का पिपलांत्री गांव अपनी अनूठी 'ईको-फेमिनिज्म' परंपरा के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां बेटियों के जन्म को केवल एक पारिवारिक खुशी नहीं, बल्कि प्रकृति के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। गांव में जब भी किसी बेटी का जन्म होता है, तो सभी ग्रामीण मिलकर उसके सम्मान में 111 पौधे लगाते हैं। यह परंपरा गांव के पूर्व सरपंच श्याम सुंदर पालीवाल ने अपनी दिवंगत बेटी की याद में शुरू की थी। इस अनूठी पहल के लिए उन्हें पद्म श्री से भी सम्मानित किया जा चुका है। कभी संगमरमर की खदानों के कारण बंजर और जल संकट से जूझने वाला यह गांव, आज तीन लाख से भी अधिक पेड़ों के कारण पूरी तरह हरा-भरा हो चुका है। इससे यहां के भूजल स्तर में भी काफी सुधार हुआ है। यहां बेटियां और महिलाएं पेड़ों को राखी बांधती हैं और उन्हें अपने भाई की तरह सुरक्षा देने का संकल्प लेती हैं। पिपलांत्री का यह मॉडल आज न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर सामाजिक बदलाव और पर्यावरण संरक्षण की एक मिसाल बन चुका है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए ये अनूठी पहल हैं सराहनीय

जागरूकता / अंजू जैन

आज पूरी दुनिया पर्यावरणीय संकट का सामना कर रही है। इस वैश्विक संकट से निपटने के लिए सांगठनिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर अनेक अनूठे-आधुनिक प्रयास शुरू किए गए हैं। क्या है इन प्रयासों की खासियतें, जानिए।

पर्यावरण संकट आज एक वैश्विक समस्या बन चुका है। जल, भूमि और वायु प्रदूषण पर्यावरण-असंतुलन के प्रमुख कारण हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए दुनिया भर में कई अत्याधुनिक और कारगर उपाय अपनाए जा रहे हैं।

ग्रीन रूफ प्रोग्राम: अमेरिका और यूरोप के कई शहरों में इमारतों की छतों पर बगीचे बनाने की पहल की जा रही है, जो शहरी तापमान को कम करने और जैव विविधता को बढ़ावा देने में मदद करती है।

ग्रेट ग्रीन वॉल (अफ्रीका): यह सहारा मरुस्थल के विस्तार को रोकने के लिए अफ्रीका के 11 देशों में बनाई जा रही 8,000 किलोमीटर लंबी पेड़ों की एक विशाल

दीवार या कहें ग्रीन बेल्ट है, जो बंजर भूमि को फिर से उपजाऊ बनाने के उद्देश्य से तैयार की जा रही है।

वर्टिकल गार्डंस: भारत समेत दुनिया के अन्य देशों में भी खास तौर से शहरों में इमारतों की दीवारों पर बगीचे बनाए जा रहे हैं। ये वर्टिकल गार्डंस हवा को शुद्ध करने और तापमान कम करने में मदद करते हैं।

बंदरगाहों के लिए कचरा पात्र सीबिन: सीबिन एक इनोवेटिव, तैरता हुआ कचरा पात्र है, जिसे विशेष रूप से बंदरगाहों, मरीन यॉट क्लबों और शांत जलक्षेत्रों से समुद्री प्रदूषण को साफ करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह समुद्र में प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए एक प्रभावी समाधान है। इस अनोखे कचरा पात्र को ऑस्ट्रेलियाई सर्फर्स एंड्रयू टर्टन और पीट सेग्लिंस्की द्वारा विकसित किया गया है।

प्लास्टिक का विकल्प एयरकार्बन: एयरकार्बन एक अनोखी जैव-सामग्री है, जिसे न्यूलाइट टेक्नोलॉजीज द्वारा विकसित किया गया है। यह तकनीक हवा में मौजूद ग्रीनहाउस गैसों (जैसे- मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड) को एक उपयोगी, कार्बन निगेटिव प्लास्टिक जैसी सामग्री में बदल देती है। यह एक थर्मोप्लास्टिक सामग्री है, जिसका उपयोग बैग, सेल फोन केस, कंटेनर, फर्नीचर, फैशन उत्पाद आदि बनाने में किया जा रहा है। एयरकार्बन प्राकृतिक रूप से नष्ट होने योग्य (बायोडिग्रेडेबल) है। यह प्लास्टिक का एक बेहतरीन टिकाऊ और ईकोफ्रेंडली विकल्प है।

गन्ने से बनी बोतलें वेगनबॉटल: ये बोतलें गन्ने की पेराई के बाद बचे हुए कचरे (वेस्ट) से निर्मित की जाती हैं। ये बोतलें गन्ने से प्राप्त नवीकरणीय कच्चे माल (बायो-पॉलीमर) से बनी होती हैं। ये गन्ने से बनी बोतलें स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित होती हैं, क्योंकि इनमें बिसफेनोल और अन्य हानिकारक रसायन नहीं होते। इन बोतलों में प्लास्टिक की गंध या स्वाद नहीं आता। पारंपरिक प्लास्टिक के विपरीत, गन्ने से बनी बोतलें 180 दिनों के भीतर विघटित हो सकती हैं।

फूड वेस्ट से एनर्जी प्रोडक्शन: फूड वेस्ट को मलबे या कचरे के रूप में फेंकने के बजाय उसे बायोगैस फ्यूल और जैविक खाद में बदलना एक उपयोगी और पर्यावरण-अनुकूल प्रक्रिया है। इस तकनीक को अवायवीय पाचन (अनएरोबिक डाइजेशन) कहा जाता है। इस बायोगैस का उपयोग खाना पकाने,

बिजली उत्पादन, या बायो-सीएनजी के रूप में किया जा सकता है।

जलकुंभी से बायोचार सीड बॉल्स: जलकुंभी से बायोचार (एक विशेष प्रकार का चारकोल) सीड बॉल्स बनाना एक टिकाऊ कृषि और पर्यावरणीय पहल है। यह न केवल हानिकारक जलकुंभी का निपटान करता है, बल्कि मृदा स्वास्थ्य और फसल की पैदावार में सुधार के लिए एक प्रभावी समाधान भी है। जलकुंभी बायोचार सीड बॉल्स मिट्टी में पोषक तत्व, नमी और कार्बन को बनाए रखने में मदद करती हैं। इसका उपयोग जल शोधन के दौरान डाई और प्रदूषकों को हटाने के लिए भी किया जा सकता है। *

सिर्फ प्रोटेक्शन नहीं फैशन भी है सनस्क्रीन

ट्रेंड / प्रतिमा अरोड़ा

आज की तारीख में जेन-जी यानी 18 से 28 की उम्र वाले लड़के-लड़कियां सनस्क्रीन को सिर्फ स्किन प्रोटेक्शन का जरिया ही नहीं मानते बल्कि उनके लिए यह स्मार्टनेस और स्टाइलिश होने का भी जरिया है। इसलिए कॉलेज कैंपस से लेकर कॉफी कैफे, जिम, मेट्रो ट्रैवल के दौरान और सोशल मीडिया की फोटो गैलरी में, युवाओं की ज्यादातर गर्मियों की तस्वीरें एसपीएफ यानी सन प्रोटेक्शन फैक्टर की चर्चा और उसके लगे बिना अधूरी समझी जाती है।

सोशल मीडिया प्रेशर: आज की तारीख में चाहे फैशन हो या ब्यूटी ट्रेंड, सोशल मीडिया के प्रभाव से कुछ नहीं बचा। क्योंकि जब तक आपकी खूबसूरती की वाहवाही दिलाने वाली कोई फोटो इंस्टाग्राम या यू-ट्यूब शॉर्ट्स में न दिख जाए, तब तक युवाओं को उसके होने की फीलिंग ही नहीं होती। यही बात उनकी ब्यूटी स्टाइल पर भी लागू होती है। जैसे ही वह सजते-संवरते हैं, तुरंत अपनी एक फोटो खींचकर सोशल मीडिया में

डाल देते हैं। हाल के सालों में ब्यूटी इंफ्लूएंसर्स ने युवाओं का कुछ इस तरह से ब्रेन वॉश किया है कि उन्हें लगता है कि ग्लोइंग स्किन केवल मेकअप से ही नहीं बल्कि स्किन की सुरक्षा से भी आती है। यही वजह है कि आजकल यूथ सनस्क्रीन का सिर्फ धूप से बचने के लिए ही नहीं इस्तेमाल करता बल्कि स्किन को ग्लो करने के लिए भी यह जरूरी माना जाने लगा है।

हो रहे हैं पॉपुलर: बाजार में टिंटेड सनस्क्रीन, जैल बेस्ड एसपीएफ प्रोडक्शन बहुत तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। आज की तारीख में जिम जाने वाले युवा चाहे लड़के हों या लड़कियां, बिना सन प्रोटेक्शन और ढेर सारा परफ्यूम लगाए नहीं जाते। यही हाल बाइक राइडिंग या आउटडोर स्पोर्ट्स खेलने वालों का भी है। दरअसल, ये सनस्क्रीन को स्किन शील्ड समझने लगे हैं, विशेषकर छोटे शहरों और कस्बों में तो इसका कोई दूसरा विकल्प ही नहीं दिखता।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट: विशेषज्ञों का मानना है कि अपने देश जैसी परिस्थितियों में युवाओं को 50 फीसदी सुरक्षा देने वाले एसपीएफ का ही इस्तेमाल करना चाहिए। हल्की धूप में इसके इस्तेमाल को आदत नहीं बनाना चाहिए और हर दो-तीन घंटे के बाद सनस्क्रीन को धो देना चाहिए, इसके बाद फिर से उसे लगाना चाहिए। समुद्र किनारे घूमने या पहाड़ों पर सैर-सपाटे के लिए निकलते समय इसे अप्लाई करना स्किन केयर के लिहाज से फायदेमंद है। *

हर दौर में रहा बरकरार लव-बेस्ड फिल्मों का जलवा

अपने आरंभिक दौर से ही प्रेम हिंदी फिल्म मेकर्स का पसंदीदा सब्जेक्ट रहा है। शुरुआती ब्लैक एंड व्हाइट के जमाने से लेकर आज भी प्रेम कहानियों को बदलते रूपों में पेश किया जाता रहा है। प्रेम पर आधारित अलग-अलग दौर की कुछ फेमस फिल्मों पर एक नजर।

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

अपने आरंभिक दौर से लेकर आज तक भी प्रेम, फिल्मों के लिए सबसे मुफीद विषय माना जाता रहा है। बॉलीवुड में बनी ज्यादातर फिल्मों की कहानियां प्यार-मोहब्बत के इर्द-गिर्द ही बुनी गई हैं। जब आम जिंदगी की प्रेम कहानियां पर्दे पर उतरती हैं, तो वे 'लार्जर देन लाइफ' यानी जिंदगी से बड़ी नजर आने लगती हैं। दर्शक फिल्मों के जरिए अपने ही अधूरे सपनों और कल्पनाओं को जीने की कोशिश करते हैं। यह बॉक्स ऑफिस पर रोमांटिक फिल्मों की सफलता का बड़ा कारण है। लेकिन प्रेम का स्वरूप फिल्मों में बदलता रहा है।

प्रेम का आदर्श रूप: 1930 से 1950 का दशक आदर्शवाद और सामाजिक बंधन का रहा। उस दौर में प्रेम कहानियों को सामाजिक बंधनों और पारिवारिक मूल्यों के आइने में देखा जाता था। 'देवदास' जैसी फिल्मों ने उस कालखंड में प्रेम, त्याग और सामाजिक वर्जनाओं के बीच के संघर्ष को बेहद आदर्शवादी और भावनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया।

प्रेम का यथार्थवादी ढंग: 1960 से 1970 का दशक यथार्थवाद और समकालीनता का रहा। आजादी के शुरुआती दौर के बाद का यह दशक प्रेम कहानियों से दोबारा गुलजार हुआ। उस दौरान 'मुगल-ए-आजम', 'प्रेम कहानी' जैसी फिल्में बनीं। इस दौर की फिल्मों में प्यार के साथ-साथ व्यक्तिगत संघर्षों, दोस्ती और बदलते पारिवारिक ढांचों के जटिल पहलुओं को अधिक यथार्थवादी ढंग से पेश किया गया।

सिनेमाई रोमांस का सुनहरा दौर: 1980 से 1990 का दशक हिंदी सिनेमा में प्यार और रोमांस का स्वर्ण काल माना जा सकता है। 'मैंने प्यार किया' और 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' जैसी फिल्मों ने युवा सोच को काफी प्रभावित किया। उस दौर की अधिकतर फिल्मों में प्रेम, संगीत, नृत्य और पारिवारिक मूल्यों का ऐसा मिश्रण हुआ करता था, जिसने प्रेम को एक बेहद सुखद और आशावादी दृष्टिकोण प्रदान किया।

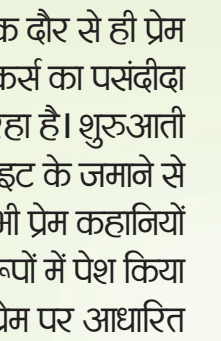

प्रेम का आधुनिक-परिपक्व रूप: साल 2000 के बाद के दौर में फिल्मों में प्रेम कहानियों के साथ-साथ विविधता और सामाजिक मुद्दे उठाए गए। नई सदी आते ही प्रेम कहानियों में सामाजिक मुद्दे हावी होने लगे। 'गदर: एक प्रेम कथा' और 'तेरे नाम' जैसी फिल्मों ने दिखाया कि कैसे प्यार, देशभक्ति और सामाजिक संघर्षों के बीच पिसता है।

न्यू-जनरेशन के प्यार को परिभाषित करने के लिए 'रहना है तेरे दिल में', 'बचना ऐ हसीनों', 'सलाम नमस्ते', 'लव आजकल', 'ये जवानी है दीवानी', 'वेक अप सिड', 'बर्फी', 'टू स्टेट्स', 'आशिकी 2', 'मसान' और 'तमाशा' जैसी कई सारी फिल्में आईं, जिसने प्यार के आधुनिक और परिपक्व रूपों को सामने रखा।

ताजी हवा के झोंके जैसी-सैयारा: आज के दौर में जहां बॉक्स ऑफिस और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स हिंसा, अपराध गाली-गलौज से भरी फिल्मों और वेब सीरीज से अटे पड़े हैं, वहां पिछले साल रिलीज फिल्म 'सैयारा' ताजी हवा के एक झोंके की तरह आई। दर्शक लंबे समय से पर्दे पर मेलोड्रामा और कोमल भावनाओं की कमी महसूस कर रहे थे। लंबे अर्से बाद सिनेमाघरों में ऐसा दृश्य देखने को मिला, जिसने बॉलीवुड के सुनहरे दौर की याद दिला दी। 'सैयारा' की सहज प्रेम कहानी ने सीधे दर्शकों के दिलों को छू लिया।

बदलता रहा प्रेम का रूप: फिल्म इंडस्ट्री के सवा सौ साल के इतिहास में प्रवृत्तियां बदलती रहीं, तकनीक उन्नत होती रही और दर्शकों का मिजाज भी बदलता रहा। लेकिन 'मुगल-ए-आजम', 'देवदास' जैसी फिल्मों से होता हुआ यह रूहानी सफर आज 'सैयारा' तक आते-आते भी उतना ही प्रासंगिक और असरदार बना हुआ है। वक्त चाहे कितना भी बदल जाए, दिल को छूने वाली प्रेम आधारित फिल्में हमेशा दर्शकों की पसंद बनी रहेंगी। *

प्रेम आधारित फिल्मों से स्टार्स डेब्यू

हिंदी सिनेमा ने बार-बार नए चेहरों को लॉन्च करने के लिए प्रेम कहानियों का ही सहारा लिया है। रोमांटिक फिल्मों से करियर की शुरुआत करने वाले सितारों की फेहरिस्त बहुत लंबी है। 'बॉबी' से ऋषि कपूर और डिंपल कपाड़िया की जोड़ी ने युवाओं को दीवाना बनाया। 'लव स्टोरी' के जरिए कुमार गौरव और विजेता पंडित रातों-रात स्टार बने। 'बेताब' से सनी देओल और अमृता सिंह तथा 'रॉकी' से संजय दत्त और टीना मुनीम ने फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखा। 'एक दूजे के लिए' में कमल हासन और रति अग्निहोत्री, तो 'कयामत से कयामत तक' में आमिर खान ने प्यार को नई परिभाषा दी। 'मैंने प्यार किया' से सलमान खान और भाग्यश्री की मासूमियत दर्शकों के दिलों में बस गई। यही सिलसिला आगे चलकर अजय देवगन-मधुश्री (फूल और कांटे), ऋतिक रोशन-अमीषा पटेल (कहो ना प्यार है), राहुल रॉय-अनु अग्रवाल (आशिकी), शाहिद कपूर-अमृता राव (इश्क-विश्क), दीपिका पादुकोण (ओम शांति ओम), रणवीर सिंह (बैंड बाजा बारात) और आलिया भट्ट-सिद्धार्थ मल्होत्रा व वरुण धवन (स्टूडेंट ऑफ द ईयर) के रूप में जारी रहा।

तपती गर्मी के इस मौसम में यंगस्टर्स को लाइट और कंफर्टेबल फुटवियर ही भा रहे हैं। इनमें से कौन से हैं सबसे ट्रेंड में, जानिए।

इस सीजन में यंगस्टर्स की पसंद

लाइट-कंफर्टेबल फुटवियर

फैशन जोन
संध्या सिंह

तपती धूप, बहता पसीना, लगातार आसमान से बरसती आग। गर्मियों में फैशन से पहले आराम का ध्यान रखना जरूरी है। इसलिए आमतौर पर बंद और फैशनेबल जूतों के शौकीन युवा भी इन दिनों हल्के-फुल्के, आरामदायक और जिनसे होकर हवा आर-पार गुजर जाती है, ऐसे फुटवियर की तलाश में रहते हैं। कॉलेज कैंपस से लेकर मेट्रो स्टेशन और ट्रैवल ब्लॉग तक हर जगह इन दिनों आरामदायक फुटवियर्स को ही तरजीह दी जा रही है। यही कारण है कि समर सीजन का सबसे बड़ा ट्रेंड कंफर्ट फैशन बन चुका है।

स्लाइडर्स-स्नीकर्स: इन गर्मियों में सबसे ज्यादा लोकप्रियता स्लाइडर्स और हल्के स्नीकर्स को मिल रही है। स्लाइडर यानी खुले रबर या फोम वाले आरामदायक फुटवियर। आजकल इन्हें युवा कैजुअल ड्रेसेस के साथ खूब पसंद कर रहे हैं। इन्हें एयरपोर्ट लुक, कॉलेज फैशन और ट्रैवल स्टाइल का भी तमगा मिल चुका है। गर्मियों में इन्हें पहनकर पैरों को पर्याप्त हवा मिलती रहती है। लड़कियां और लड़के दोनों ही इन्हें जींस, कुर्ती, ट्राउजर और यहां तक कि इंडो-वेस्टर्न ड्रेसेस के साथ भी पहन रहे हैं।

कोल्हापुरी-प्लेटफॉर्म चप्पलें: युवाओं के बीच इन गर्मियों में कोल्हापुरी, स्ट्रेपी सैंडल और प्लेटफॉर्म चप्पलों का ट्रेंड भी लौटकर आया है। वास्तव में गर्मियों में फुटवियर चुनते समय अब युवा फैशन के साथ-साथ हेल्थ को भी इंपॉर्टेंस देते हैं। डॉक्टरों का मानना है कि लंबे समय तक बहुत टाइट या भारी जूते पहनने से पैरों में पसीना और फंगल इंफेक्शन के कारण दर्द की समस्या परेशान करती है। यही कारण है कि सांस लेने योग्य यानी ब्रीदेबल मैटीरियल वाले फुटवियर की मांग भी है। यही कारण है कि फैब्रिक और लाइट फोम के बने फुटवियर इन गर्मियों में खूब पसंद किए जा रहे हैं।

ऑनलाइन शॉपिंग का असर: बाजार के जानकारों का मानना है कि फैशन केवल खरीदारों की मर्जी से नहीं बदलता बल्कि बाजार अपने को नया करते रहने के क्रम में खुद भी नए फैशन इंट्रोड्यूस करता है ताकि उसकी टारगेट बिक्री का सिलसिला बना रहे। यही कारण है कि इस साल ऑनलाइन शॉपिंग और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म में भी अपनी बिक्री को नई ऊंचाइयां देने के लिए गर्मी के लिए कई तरह के फुटवियर लांच किए हैं। जो छोटे शहरों से लेकर महानगरों तक में युवाओं को भा रहे हैं और ये उनकी ऑनलाइन शॉपिंग को भी अच्छी ड्राइव दे रहे हैं।

लेकिन ऑनलाइन बाजार बहुत स्मार्ट होता है। वह जानता है कि ऑनलाइन बाजार में वही चीज होगी, जो नई होगी, जिसमें फैशन और स्टाइल की ताजगी होगी और सबसे बड़ी बात जो बजट में होगी। कुल मिलाकर समर फुटवियर केवल फैशन तक सीमित नहीं है। इसमें आराम, स्वास्थ्य, मौसम और बजट का भी ध्यान रखा गया है।

इन बातों का रखें ध्यान: इस सीजन में फुटवियर खरीदते समय कुछ बातों का ध्यान रखें। जैसे- बहुत टाइट जूते खरीदने से बचें। ऐसे मैटीरियल के फुटवियर चुनें, जिनमें हवा आर-पार आराम से होती हो। लंबे समय तक पहनने के लिए हल्के फुटवियर बेहतर होते हैं। ऐसे जूते न पहनें जिनको पहनने से पसीना आता हो। केवल फैशन नहीं, पैर के आराम का ध्यान रखना भी जरूरी है। *